!! श्री परम गुरु परमात्मने नमः !!

परम ज्ञान प्रकाश

दिसम्बर- 2025 आध्यात्मिक मासिक

श्री परमधाम आश्रम, हरिद्वार

वर्ष ५६

श्री अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम, परमपुरी
रायपुरचौर रोहतास (बिहार)

अंक १२

प्रेमावतार श्री परमप्रभु (पूज्य गुरूदेव)

अमृतं तू विद्याः

इतः पूर्णः ततः पूर्णः पूर्णात्पूर्णः परात्परम् । पूर्णानन्द प्रपद्येऽहं सद्गुरू शंकर स्वयम् ।।

परम ज्ञान प्रकाश

दिसम्बर, २०२५	स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा। संकल्प प्रभवान्कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः। मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः।। ''मनुष्य को चाहिए कि संकल्प तथा श्रद्धा के साथ योगाभ्यास में लगे और पथ से विचलित न हो। उसे चाहिए कि मनोधर्म से उत्पन्न समस्त इच्छाओं को निरपवाद रूप से त्याग दे और इस प्रकार मन के द्वारा सभी ओर से इन्द्रियों को वश में करे।''	वर्ष – ५६ अंक : १२

आरति कीजै श्री गुरुवर की

— स्वामी तुरीयानन्दपुरी जी

गुरु ही ब्रह्मा, गुरु ही विष्णु, गुरु मूर्ति शिव शंकर की।।आरती।।
सत्य सगुण साकार रूप हैं,परम पिता परमेश्वर की।
बार—बार विनती मैं करता परम गुरु श्री परमेश्वर की।।आरती।।
जो अज्ञान अंधेरा नासै, ज्ञान—किरण बन दिनकर की।
दिव्य दृष्टि दे आत्म लखावै, नमन करुँ मैं श्री गुरुवर की।।आरती।।
सब गुण आगर, कृपा के सागर, उस मोह निशा के तम हर की।
संत रूप धर के आये, बन्दौं चरण—कमल गुरुवर की।।आरती।।
जनम—मरण के संकट काटें, नमन करौं मैं संकट हर की।
सहज समाधि अनाहद धुनि, जप अजपा के दानेश्वर की।।आरती।।
सहज ही रूप स्वरूप लखावैं, धन्य—धन्य श्री गुरु हरि हर की।
हारि निहारि बारि मैं जाऊँ, परम अनूप रूप गुरुवर की।।आरती।।
श्रुति शेष शारद नारद भी, हैं गुण गाते श्री गुरुवर की।
राम कृष्ण गुरु की आरती की, आरति है उस आरति हर की।।आरती।।

ψψψ

परम ज्ञान प्रकाश

(आध्यात्मिक मासिक)

प्रकाशन कार्यालय

श्री अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम, परमपुरी, ग्राम व पोस्ट–रायपुरचौर, निकट–रेलवे स्टेशन सासाराम से 14 कि.मी.गुप्ताधाम वाले रोडपर, जिला–रोहतास,(बिहार), पिन कोड–821113.

मो०–7372000511

संस्थापक

श्रीमत्परमहंस परिब्राजकाचार्य परमश्रद्धेय

सद्गुरुदेव

ब्रह्मलीन श्री श्री 108 श्रीमत्स्वामी परमज्ञानानन्दपुरीजी महाराज

सम्पादक

डॉ नरेन्द्र तिवारी 'ज्योतिर्विद'

मो०–9839143791

कार्यकारी सम्पादक

श्री जगदीश प्र० सिन्हा 'दयानिधि'

मो०–9334319012

सह–सम्पादक

स्वामी प्रज्ञानन्दपुरीजी

मो०–7060862109

E-mail ID:
paramgyanprakash@gmail.com

मो०–7372000512

सद्गुरु–धाम

श्री गुरु मन्दिर नंगली तीर्थ,

पत्रा० सकौती टाण्डा, भाया– मण्डोरा, जिला–मेरठ (उ०प्र०)

प्रमुख शाखा केन्द्र

1. ***श्री अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम,*** सद्गुरुनगर ग्राम व पो०–भरमाड़, तह०–ज्वाली, जिला–काँगड़ा (हिमाचल प्रदेश) मो– 09418193892
2. ***श्री अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम,परमधाम,*** एम०–3 शास्त्री नगर, नई दिल्ली–52, मो०–09999752158
3. ***श्री अद्वैत स्वरूप हीरापुरी सत्संग भवन,*** 613/7 पंचकुला, (हरियाणा) मो०–09463205587,09417255989
4. ***श्री अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम,*** कत्था फैक्ट्री के पीछे, हजारी बाग, नित्यानन्द स्वामी मार्ग, कनखल, हरिद्वार(उत्तराखण्ड)मो० 09999801789,09999752158
5. ***श्री अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम,*** मथुरा बांध, पो० व जिला–गढ़वा (झारखण्ड) मो० 09431338705
6. ***श्री अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम परम तपोधाम,*** ग्राम–नागनाथ पुरवा, पो–सिगहा–चन्दा, जिला–गोण्डा (उ०प्र०) मो.–9935027850
7. ***श्री अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम,*** 318–बी आवास विकास जनकपुरी,पो० इज्जतनगर, बरेली (उ०प्र०)
8. ***श्री अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम,***ग्राम–मोर डिहरी, पो०–पड़रावाँ, औरंगाबाद (बिहार), मो०– 8002528014
9. ***श्री अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम,*** ग्रा० व पो०– सोनबरसा, औरंगाबाद (बिहार) मो०–9199603768
10. *श्री अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम,* ग्राम व पो०कारा, जिला–औरंगाबाद (बिहार) मो०–9955655225
11. ***श्री अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम,*** अखिल भारतीय श्री परमधाम, नसरुल्लापुर, बदायूँ (उ.प्र)
12. ***श्री अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम,*** श्री ठाकुर द्वारा गोसाई गोवर्धन, बालापुरीजी, केशव धाम, टंगेल रोड, ग्राम–सिरसगढ़, पो० मुलाना, अम्बाला (हरियाणा) मो०–9315686000
13. ***श्री अद्वैत स्वरूप हीरा परमज्ञान आश्रम,*** स्वामी परम नगर (बंगा रोड), खोथरा रोड, फगवाड़ा, जिला– कपूरथला–14441 (पंजाब) मो०–7973512449
14. ***श्री अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम,*** ग्राम–मकराईन, पो०–डालमियाँ नगर, जिला–रोहतास (बिहार) मो०–99399552856, 8102963320
15. ***श्री अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम,*** परमनगर, नियर–माइको, सासाराम, रोहतास (बिहार) मो०–7992457251, 9473053852
16. ***श्री अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम,*** ग्राम गुंजीयाबोर, पो०–हसौद, वाया–बिर्रा, जिला–जाजंगीर (चांपा), छत्तीसगढ़–495661, मो०–09430477071
17. **श्री अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम,** लीलाचक, पो. सन्सा, जिला–औरंगाबाद (बिहार)
18. **श्री अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम,** टीपा, पो0 नौहट्टा (रोहतास)। मो0– **6205217308**

*

अनुक्रमणिका

1.	विनती	03
2.	सम्पादकीय	04
3.	श्री परमहंस उवाच	05
4.	श्री स्वरूप वचनामृत	07
5.	श्री हीरा सन्देश	09
6.	अमृत प्रसाद	11
7.	प्रवचन पीयूष	15
8.	प्रवचन सुधा	17
9.	सत्संग सुधा	21
10.	कथा–लोक	23
11.	विचारों के झरोखे से	24
12.	आश्रम समाचार	26
13.	2026 का वार्षिक राशिफल	28
14.	मासिक राशिफल एवं मुख्य पर्व (जनवरी,2026)	31
15.	विवेक वाटिका	32

*

—: विनती :—

परम गुरु राम मिलावन हार।
परम विचित्र चरित्र तुम्हारे, अविगत अकथ अपार।
रचना देख निराली तेरी, ब्रह्म हुए बलिहार।।
महिमा अपरमपार तुम्हारी, कोई न जानन हार।
ज्ञान गिरा गोतीत कृपानिधि जन–जीवन दातार।।
नाम अहर्निश रहे कंठ पर, बिनती बारम्बार।
नन्दन नन्द यशोदा नन्दन, त्रिभुवन के श्रृंगार।।
दर्शन सों कल्याण जगत का, हरते हो भूभार।
चरणकमल तेजि 'तुरियानन्द' का, अपना नहीं अधार।।

*

—: विनम्र निवेदन:—

सभी लेखको कवियों, साहित्यकारों, पूज्य महात्मागणों एवं पाठकों से विनम्र निवेदन है कि वे अपनी रचना/अपने विचार, उद्‌गार शुद्ध–शुद्ध रूप में टंकित 'परमज्ञान प्रकाश' के वाट्सअप नं0 7372000512 पर भेजने की कृपा करें। — सम्पादक!

सम्पादकीय...

''ब्रह्म अविनाशी तथा नित्य है और इसका विधान कहीं नहीं बदलता। किन्तु ब्रह्म से भी परे परब्रह्म होता है। ब्रह्म का अर्थ है जीव तथा परब्रह्म का अर्थ भगवान् है। जीव का स्वरूप भौतिक जगत में उसकी स्थिति से भिन्न होता है। भौतिक चेतना में उसका स्वभाव पदार्थ पर प्रभुत्व जताना है, किन्तु अध्यात्मिक चेतना में उसकी स्थिति परमेश्वर की सेवा करना है। जब जीव भौतिक चेतना में होता है तो उसे इस संसार में विभिन्न प्रकार के शरीर धारण करने पड़ते हैं। यह भौतिक चेतना के कारण कर्म अथवा विविध श्रृष्टि कहलाता है। गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है –

अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते। भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः।।

अर्थात् अवनाशी और दिव्य जीव ब्रह्म कहलाता है और उसका नित्य स्वभाव अध्यात्म का आत्म कहलाता है। जीवों के भौतिक शरीर से सम्बन्धित गतिविधि कर्म या सकाम कर्म कहलाता है।

यति सम्राट रूहानी शहनशाह परम अराध्यदेव श्रीमत् परमहंस दयाल स्वामी अद्वैतानन्दजी महाराज ने वर्तमान काल में ईश्वर प्राप्ति के चार साधन बतायें हैं– 1. अभ्यास, 2. विचार, 3. ध्यान, 4. समाधि। फ़क़ीरों की भाषा में इसको ज़िक्र, फ़िक्र, मराकबा तथा फ़ना कहा गया है। फ़ना के पश्चात् बक़ा है जिसको जीवन मुक्ति कहते हैं। उसके पश्चात् वसाल माना गया है, जिसको विदेह मुक्त कहते हैं। अभ्यास, विचार, ध्यान एवं समाधि ही कर्म हैं जो जीवात्व के लिए प्रयुक्त किए गए हैं। अर्थात् इन कर्मों के साधन से ही ब्रह्म का मिलन परब्रह्म अर्थात् भगवान् से संभव है।

कालचक्र निरन्तर गतिमान है। देखते देखते वर्ष 2025 का अन्तिम माह भी हमारे हाथ से निकलता जा रहा है। नव वर्ष 2026 के स्वागत के लिए हम तैयार हैं। दिनांक 23 जनवरी, 2026 को बसन्त पंचमी के दिन परमाराध्य पूज्यपाद श्री नंगली निवासी भगवान् जी का पावन जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से परमधाम, रायपुरचौर, सासाराम, रोहतास में मनाया जाएगा। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस पावन पर्व पर हम सिद्धपीठ परमधाम में अवश्य मिलेंगे।

प्रातः स्मरणीय पूज्य श्रीसद्गुरुदेव भगवान्जी के चरणों में प्रार्थना है कि वे अपनी कृपा–दृष्टि हम सब पर बनाए रखें। गुरु दरबार की ओर से पूज्य गुरु भगवान् का अशेष आशीर्वाद आप सभी को प्राप्त हो! आपके पत्र की प्रतिक्षा में। **!!''जय सच्चिदानन्द''!!**

श्रीगुरुचरणेशु
जगदीश प्र० सि०'दयानिधि'
कार्यकारी सम्पादक

*

श्री परमहंस उवाच :—

—: ईश्वर प्राप्ति के चार साधन :—

यति सम्राट रूहानी शहनशाह परम अराध्यदेव श्री परमहंस दयाल स्वामी अद्वैतानन्दजी महाराज जी ने वर्तमान काल में ईश्वर प्राप्ति के चार साधन बतायें हैं— 1. अभ्यास, 2. विचार, 3. ध्यान, 4. समाधि। फ़कीरों की भाषा में इसको ज़िक्र, फ़िक्र, मराकबा तथा फ़ना कहा गया है। फ़ना के पश्चात् बक़ा है जिसको जीवन मुक्ति कहते हैं। उसके पश्चात् वसाल माना गया है, जिसको विदेह मुक्त कहते हैं। ज़िक्र अथवा अभ्यास का सम्बन्ध ह्रदय अथवा इन्द्रियों से है। फ़िक्र अथवा विचार का सम्बन्ध बुद्धि से है। तसव्वर अथवा ध्यान मन से होता है। फ़ना अहंकार को कहते हैं। —सम्पादक।

ईश्वर प्राप्ति के चार साधन बतायें गयें हैं। 1.अभ्यास, 2. विचार, 3. ध्यान, 4. समाधि। फ़क़ीरों की भाषा में इसको ज़िक्र, फ़िक्र, मराकबा तथा फ़ना कहा गया है। फ़ना के पश्चात् बक़ा है जिसको जीवन मुक्ति कहते हैं। उसके पश्चात् वसाल माना गया है, जिसको विदेह मुक्त कहते हैं। ज़िक्र अथवा अभ्यास का सम्बन्ध ह्रदय अथवा इन्द्रियों से है। फ़िक्र अथवा विचार का सम्बन्ध बुद्धि से है। तसव्वर अथवा ध्यान मन से होता है। फ़ना अहंकार को कहते हैं।

1. अभ्यास— इसके अनेक ढंग हैं। महात्मा जिज्ञासु की अवस्था देखकर कोई ऐसा ढंग बता देते हैं। अनेक व्यक्तियों को जिह्वा वश करने का तो अनेक को प्राण वश में करने का अभ्यास बताते हैं। इन सब का तात्पर्य मन को निरोध करना है। इसका सर्वश्रेष्ठ अभ्यास त्रिकुटी' ध्यान है। जिसका वर्णन गीता के पांचवे अध्याय में हुआ है। इसको सुर्त साधना, सुन्न ध्यान और सहज समाधि भी कहते हैं। मुसलमान फ़क़ीर इसको नसीरा महमूदा कहते हैं। इसमें मुख बन्द करके स्वांस के आने—जाने का मार्ग नाक द्वारा रखकर दृष्टि को भवों के मध्य में जहाँ नाक का बांसा आरम्भ होता है, ठहराते हैं। इससे मन एकाग्र हो जाता है और अन्दर के संकल्प—विकल्प समाप्त हो जाते हैं। शुरु में आँखों पर बड़ा ज़ोर पड़ता है और बहुत खुश्की होती है। इसलिए इस अभ्यास को धीरे—धीरे बढ़ाना चाहिए और भोजन में चिकनाई अवश्य होनी चाहिए।

(1) ज़िक्र अर्थात् अभ्यास को चार भागों में बाँटा जा सकता है— (१) ज़ुबान ज़ाकिर है और दिल ग़ाफ़िल है। (२) ज़ुबान ज़ाकिर है। इसके साथ दिल इस तरह ज़ाकिर है कि कभी—कभी दिल ग़ाफ़िल भी हो जाता है और ज़ुबान ज़ाकिर रहती है। (३) ज़ुबान और दिल दोनों एक साथ ज़ाकिर रहते हैं परन्तु कभी—कभी दोनो एक साथ ज़ाकिर रहते हैं परन्तु कभी—कभी दोनो एक साथ ग़ाफ़िल हो जाते हैं। (४) ज़ुबान ग़ाफ़िल और आमिल हुआ तब दिल ज़ाकिर और हाज़िर हो जाता है। यह सर्वश्रेष्ठ मन्ज़िल है। इससे वास्तविक लक्ष्य तक पहुँचा जाता है।

(2) विचार— गीता के छठे अध्याय में यह वर्णन मिलता है कि समतल भूमि पर बैठकर बिना हिले जुले अपने शरीर द्वारा आसन जमाये, सिर और गर्दन को सीधा रखे, अपनी दृष्टि को नाक के अग्रभाग अर्थात् नोक पर जमाए, मन को एकाग्र कर अभ्यास में लीन हो जाए। इस अभ्यास के कारण संकल्प—विकल्प शान्त हो जाते हैं, जिससे सच्चा आनन्द मिलता है। इस पर यह एक भजन है—

मन के लगाये हरि पावे, योगी या विधि मन को लगावे।
जैसे पतंग जले दीपक में प्रीत से प्राण जलावे।।
जगमग जोत सही नहीं जावे जोत में आन समावे।
योगी या विधि मन को लगावे।।
जैसे नार पनघट को जात ही सिर गागार भर लावे।
सखीं संग से बोलत—चालत सुर्त गागर से लावे।
जैसे नट कला के कारण गाढ़ा ढोल बजावे।
योगी या विधि मन को लगावे।।

(3) ध्यान— अभ्यासी जिज्ञासुओं की पृथक—पृथक दशा का अवलोकन करके महात्माओं ने ध्यान के भी अनेक ढंग बताए हैं। सभी द्वारों अर्थात् आँख, कान, और मुख इत्यादि द्वारा मन को रोककर, आँखे

उलटकर ज्योति का ध्यान करे, इससे साक्षात्कार होता है–

आँख कान मुख ढँाप के नाम निरंजन ले।
भीतर के पट तब खुले जब बाहर से पट दे।
नैनों की कर कोठरी पुतली पलंग बिछाय।
पलकों की चिंक डाल के पिय को लेय चुराय।।

ईश्वर का ध्यान के अतिरिक्त और किसी का ध्यान नहीं होना चाहिए। समाधि अथवा लय से तात्पर्य कपाली चढ़ाना नहीं है। गीता के अठारहवें अध्याय के 66वें मन्त्र में यह भाव आया है–

सर्व धर्मान्परित्यज्य मामेकंशरणं ब्रज।
अहंत्वा सर्व पापेभ्योमोक्षयिष्यामिमाशुचः।।

इस मंत्र का तात्पर्य यह है कि तुम सब धर्मों को छोड़कर एक मेरी ही शरण में आ, मैं तुम्हें सब पापो से मुक्त कर दूँगा। 'धर्म के अर्थ हैं अहंकार, जिसे हमने अपना आप मान रखा है, उसको छोड़ देना ही शरण में आना है। जब अंहकार का पर्दा उठ गया तो फिर आपा कहाँ रहा? परन्तु बिना अभ्यास के अंहकार का त्याग कठिन है। सभी अभ्यास एक प्रकार के धर्म हैं। सभी मनुष्यों में से स्वयं एक आवाज हो रही है, जिसे संतो ने गुप्त रखा है। इसको खोजने का ढंग यह है कि साधक मुख को बन्द करके नाक से स्वांस लेवे और हृदय से संकल्पों को दूर करके स्वांस के आने–जाने पर ध्यान रखें। इससे अभ्यासी को एक प्रकार की आवाज अर्थात् शब्द अपने घट में सुनाई देगा। सर्वप्रथम यह शब्द हृदय में सुनाई देता है, बाद में अभ्यास करके यह दाहिनी आँख के भवों के ऊपर सुनाई देता है। शुरु मे यह शब्द स्पष्ट रूप से सुनाई नहीं देता बल्कि कुछ मिली जुली गड़बड़ सी आवाज सुनाई देती है। कुछ दिनों तक अभ्यास करते रहने से स्पष्ट रूप से दस प्रकार की आवाजें सुनाई देती है। जिनको सुनकर मनुष्य मस्त हो जाता है। अपने अस्तित्व को भूल जाता है और समाधि में स्थित हो जाता है। इस अभ्यास के साथ महात्मा खेचरी मुद्रा भी कराते हैं जिससे अमिरस मस्तिष्क से चलकर गले मे गिरता है। उससे ऐसा आनन्द उत्पन्न होता है कि साधक बिल्कुल मस्त हो जाता है। इसमें दाँतो को दबाकर जीह्वा को उलटकर तालू से लगाते हैं। इस अभ्यास को 'सुर्ति शब्द का मेल' और 'शुगल सरमदी सुल्तान उल जिकर' भी कहते हैं। दस प्रकार की आवाजों का वर्णन इस प्रकार है।

1. झींगर की झंकार– इसके सुनने से शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

2. चक्की के चलने का सा घर घर शब्द– इसके सुनने से शरीर में सुस्ती और एक प्रकार की मस्ती सी पैदा होती है।

3. घण्टे की आवाज़– इससे प्रेम हृदय में उमड़ता है।

ग़ाफ़िल तुझे घड़ियाल यह देता है मुनादी।
गरदूं ने घड़ी उम्र की एक और घटा दी।।

4. शंख की आवाज़– इसके सुनने से नशे के कारण सिर घूमने लगता है और मस्तिष्क में से सुगन्ध आती है। यह शब्द सहस्त्रदल कमल से सुनाई देता है।

5. बीन की आवाज़– अमृत मस्तिष्क से नीचे का उतराता है। यह शब्द गगन अथवा त्रिकुटि में सुनाई देता है।

6. ताल की आवाज़– इसके सुनने से अमृत मस्तिष्क में से उतरकर गले में पड़ता है। यह शब्द दसवें द्वार से सुनाई देता है।

7. बांसुरी की आवाज़– इससे दूर–दूर की आवाज सुनी जाती है। प्रकृति के अनोखे रहस्य प्रगट होते हैं।

8. मृदंग अथवा पखावज– गुप्त वस्तुओं को देखाता है। इस शब्द के सुनने से साधक की बुद्धि प्रकाशित होती है और उसे अनहद नाद अन्दर–बाहर सब स्थानो पर सुनाई देता है।

9. नफ़ीरी की आवाज़– इसके सुनने से शरीर ऐसा सूक्ष्म हो जाता है कि जहाँ चाहे उड़कर जा सकता है और सभी की आँखों से अलोप हो सकता है। वह सबको देखे और उसको

शेष पृष्ठ 8 पर...

शरणागति धर्म

रूहानी शहनशाह अनन्तश्री विभूषित ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मश्रोत्रिय श्री श्री १००८ श्री सद्‌गुरुदेव स्वामी स्वरूपानन्दजी महाराज ने शरणागति धर्म के सम्बन्ध में फरमाया है– ''आपका और हमारा संबंध केवल परमार्थ का है परंतु आप तो इस झंझट से खाली नहीं हो सकते। जब आप एकांत समय मांगते है तो उस समय यही प्रार्थना करते हो कि हमको अमुक वस्तु की आवश्यकता है। बड़ी मुश्किल से शारीरिक यात्रा ही पूरी करते हो। जिस तुच्छ संसार को त्याग कर आये हो, उसको ही अपनी तन यात्रा के लिए मांगते हो। याद रखिए कि वह साधारण ममता ही एक दिन स्थूल बनकर आपको फिर वहाँ ही ले जायेगी और अपना घर–घाट बनाने पर मजबूर हो जायेंगे। अभी आप सबकुछ देकर भी अपने मन को नहीं दे सकते। मुझे आपके धन की आवश्यकता नहीं। धन और तन, मन के रहने के स्थान है आपको धन दिया तो अपने ही उपभोग के लिए तन दिया यह भी केवल कथनी मात्र है। मन आपके धन और तन का पहरा दे रहा है अर्थात् मन अभी आपके पास ही है।'' – सम्पादक!

एक दिन श्री महाराजजी ने अपने श्रीमुख से सत्संग के समय यह वचन उच्चारण कियेः– इस दरबार में आप सबलोग अपने–अपने विचार सहित घर–बार छोड़कर आए हो। केवल मेरे प्रेम के लिए और अपने कल्याण के लिए आपका यहाँ आना हुआ है। आप लोगो का त्याग प्रशंसनीय है। आपने जो कुछ कर दिखाया ऐसा प्राचीनकाल में कदापि हुआ होगा परंतु जो अभी गृहस्थ वेश में है अथवा वाणप्रस्थ हैं और भगवा वेश नहीं लिया। हम भी अभी आपको भगवा वेश देकर खुश नहीं हैं। अभी आप उस रूप तक नही पहुँचे, केवल उस मंज़िल तक जाने की इच्छा है। अभी आपलोगों के मार्ग में बहुत से बंधन हैं, जिस भारी बंधन को आप तोड़कर आये हो उन बंधनो की सूक्ष्म जड़े अभी विद्यमान हैं जो फिर स्थूल बन सकती है। आपने घर–बार छोड़ा और सबकुछ मेरे अर्पण करके आप निर्बन्ध होने आए, परंतु अभी अपना और कर्त्तव्य समझ बैठे हो कि गुरु–दरबार में हमारे बच्चे भूखे–प्यासे ना रह जायें। परिवार की ममता आपको फिर चक्कर में डाल देगी। जिस ध्येय को आप लेकर आये थे बड़े दुःख की बात है कि वह ध्येय इसी जल तरंग में फँस गया। मन आपको धोखा दे रहा है और कहता है यह शरीर और बाल–बच्चे भी श्री गुरु महाराज इष्टदेव भगवान् के हैं। इनकी सेवा करने में भी हमारा कल्याण ही है। इसके ऊपर एक दृष्टांत है–

किसी ब्रह्मज्ञानी गुरु के पास एक त्यागी चेला रहता था। कुछ समय पश्चात् गुरुजी ने सेवक का अनुभव जानने के लिए पूछा कि ''बताओ बेटा! हमारी संगत और वचनो का आप पर क्या प्रभाव हुआ– अपना अनुभव हमें बताओ।'' इतना सुनकर शिष्य बोला कि ''गुरुदेव! जो संसार बेगाना था वह अपना प्रतीत होने लगा है, मेरे से पृथक कुछ भी नही रहा।'' गुरुजी बोलेः–''भैय्या! जो अपना था वह कहॉ गया?'' शिष्य ने उत्तर दियाः–''वह तो अपना ही है।'' तो गुरुजी खूब हँसे और फिर चिंता करते हुए बोलेः–''बेटा! आपने हमारे सत्संग को उल्टा समझा है। हमने कहा था कि संसार सब ईश्वर रूप ही है और तब ममता ही आगे नही बढ़ने देती। अपनी इस ममता रूपी गठरी को फेंक दो तब सब आपका ही है।'' साधारण लोगों ने जिज्ञासा इसी को मान रखा है और फिर खाली ब्रह्मज्ञान का कथन कहते है कि सबकुछ मैं हूँ, सबकुछ मेरा, परंतु जो मेरा था वह अभी तक अनुभव ही ना हो सका।

श्री गुरुनानक देवजी ने जब मोदी खाना में काम किया और ग्राहको को सौदा तौलकर देने लगे तब एक से बारह तक गिनती करते समय जब तेरह का शब्द आया तो उनको यह शब्द बहुत ही प्यारा लगा फिर वह तेरह के अतिरिक्त कुछ बोलते ही

नहीं थे। चाहे एक बार तौलना हो या सौ बार मुख से तेरह शब्द ही निकलता रहा। फिर वह कहने लगे मैं तेरा, मैं तेरा यह कहते—कहते वह मैं तु में गुम हो गयी और केवल तेरह ही रह गया। लोगों में यह चर्चा होने लगी कि दुकान में घाटा पड़ेगा, यह तो प्रत्येक को तेरा कहकर सौदा देते है और ग्राहक जितना भी ले जाए परंतु यह तेरा—तेरा ही कहते रहते हैं। इस दशा को जानकर उनकी परीक्षा ली गयी तब दुकान से ढाई सौ रुपये निकले अर्थात् इतना लाभ तबसे इन्होंने दुकान का काम ही छोड़ दिया। इनका भावार्थ श्री कबीर जी के शब्दो में सुनिए—

तू तू करता तू भया मुझ में रही ना हूँ।
वारी तेरे नाम तों, जिन देखा तित तू।।

इसलिए प्रेमी! जिन्होंने प्रभु से प्यार किया है सो तो वही बन गए और कई लोग उन महापुरुषों की नकल करते हुए संसार को ठगने लगे। वास्तव में वह महापुरुषों की गति नही जान सके। उनका कर्त्तव्य तो यह था कि जो दिल में हो वही जीह्वा पर हो और जीह्वा कहे वही दिल में हो। ठीक वही करके भी दिखाते। जैसे स्वामी रामतीर्थजी ने अपना घर—घाट प्रभु अर्पण कर घर के दरवाजे खोल दिए और लोग सब लुटकर ले गये। उन्होंने सबको ईश्वर रूप जानकर सबको खुशी से सबकुछ दे दिया और दोनो अबोध बालकों को लाहौर नगर के बाजार में जहाँ लोगो की बहुत भीड़ थी। छोड़ दिया। वह बोलेः—"यहाँ भी मेरा राम है, वह इनकी सम्भाल उचित समझ करेगा। संसार की दृष्टि में वह निर्दय थे, परंतु सच्ची सहानुभूति तो इसी को कहा जाता है। यह हर एक के वश का काम नहीं है। आपका और हमारा संबंध केवल परमार्थ का है परंतु आप तो इस झंझट से खाली नहीं हो सकते। जब आप एकांत समय मांगते है तो उस समय यही प्रार्थना करते हो कि हमको अमुक वस्तु की आवश्यकता है। बड़ी मुश्किल से शारीरिक यात्रा ही पूरी करते हो। जिस तुच्छ संसार को त्याग कर आये हो, उसको ही अपनी तन यात्रा के लिए मांगते हो। याद रखिए कि वह साधारण ममता ही एक दिन स्थूल बनकर आपको फिर वहाँ ही ले जायेगी और अपना घर—घाट बनाने पर मजबूर हो जायेंगे। अभी आप सबकुछ देकर भी अपने मन को नहीं दे सकते। मुझे आपके धन की आवश्यकता नहीं। धन और तन, मन के रहने के स्थान है। आपको धन दिया तो अपने ही उपभोग के लिए तन दिया यह भी केवल कथनी मात्र है। मन आपके धन और तन का पहरा दे रहा है अर्थात् मन अभी आपके पास ही है। धोबी को कपड़े की ज़रूरत होती है। वह कपडे. वाले को थोड़े ही धोने लगता है। मन—रूपी कपड़ा गुरु—रूपी धोबी को देकर इसको निर्मल अनादि रूप तक पहुँचना ही था, परंतु सर्व साधारण व्यक्ति इस भेद को नही जान सके। श्री कबीरजी का कथन हैः—

गुरु धोबी शिष्य कपड़ा, साबुन सर्जनहार।
सुर्त शीला पर धोईये, निकसे रंग अपार।।

बस गुरुदेव के अर्पण होने से मन की मलिनता दूर होगी यही सच्ची शरणागति है। ✻

पृष्ठ 6 का शेष भाग...

कोई न देखे। वह देवताओ का भी देवता हो जाता है अर्थात् मृत्यु का पर्दा जो उसकी आँखों पर पड़ा हुआ है, वह उठ जाता है। यह शब्द सत्लोक से सुनाई देता है।

10. बादल की गरज— यह अनहद नाद है। इसके सुनने से जिज्ञासु ब्रह्मलीन हो जाता है और बुरे—भले विचार, सिद्धि शक्ति और चमत्कारों को बच्चों का खेल समझता है।

इन आवाज़ो के सुनने में अधिकतर अन्तर होता है अर्थात् किसी को पहले कोई आवाज सुनाई देती है और दूसरे को कोई और तीसरे को कोई और ही। परन्तु इस भेद पर ध्यान नहीं देना चाहिए। बायीं ओर जो शब्द सुनाई देता है उसकी ओर ध्यान नहीं देना चाहिए और ना ही उसे सुनना चाहिए। ज्योति स्थान से जहाँ सिद्धि की प्राप्ति होती है, बच कर निकल जाना चाहिये, फिर मंज़िल तक पहुँचना सरल है। ✦

—: अमृतोपदेश :—

"पूज्यपाद श्री श्री १००८ श्रीमत्परमहंस सदगुरु स्वामी हीरानन्दपुरीजी महाराज जी ने इस 'अमृतोपदेश' के माध्यम से अति सूक्ष्म विषय को प्रतिपादित किया गया है– "मनुष्य मात्र जानते हैं कि यह मृत्यु सर्व प्राणियों के लिए अनादि काल से नियमबद्ध है अथवा स्वाभाविक है। परन्तु इतना ज्ञान होने पर भी कोई प्राणी यह नहीं चाहता कि मैं न रहूँ, या मर जाऊँ। सभी सदा ही अपनी विद्यमानता चाहते हैं। अज्ञ–प्रमाण प्राणी भी मरने से डरकर अपनी रक्षा का उपाय करता है। इस मरण से जैसे अज्ञानी जीव भयभीत होता है, वैसे ही विवेकशील शास्त्रज्ञानी पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। इसलिए इसका नाम अभिनिवेश है।" – सम्पादक!

प्रिय गुरुमुख, सत्संगियो! संसार के सर्व स्त्री–पुरुष, बाल–वृद्ध, धनवान–निर्धन, दानी–भिक्षुक, स्वामी–सेवक अथवा मनुष्य मात्र सर्वप्रकार से सर्व दुःखों की निवृत्ति और सुख–शान्ति ही चाहते हैं। उनको प्राप्त करने के लिए अपनी योग्यतानुसार कभी भौतिक और कभी आध्यात्मिक साधनों द्वारा प्रयत्न भी करते है, किन्तु उनकी सुख–शान्ति की प्राप्ति और दुःख की निवृत्ति का साधन वही होता है जिनसे उनको प्रेम और ज्ञान होता है। जैसे धन–संचय, दीर्धकाल जीवन, आहार–विहार, समाज में मान, शासन, महल, विवाह, पुत्र–पुत्री, विषय–भोगादि को ही सुख–शांति का साधन मानकर इन्हीं की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करते हैं। परन्तु इन सर्व पदार्थों की प्राप्ति होती नहीं, यदि हो जाय तो उतनी ही तृष्णा और अशान्ति बढ़ जाती है।

इस प्रकार दुःखों का सताया हुआ मनुष्य का मस्तिष्क बिगड़ा न हो, और उनको किसी मत–मतान्तर बालों ने बहकाया न हो तो वे सदैव सुख–शान्ति की ही इच्छा करते हैं। वे दान, धर्म, सेवा, परमार्थ, सुकर्म, सत्संग, विद्या, ईश्वर–चिन्तन आदि साधनों द्वारा सुख–शान्ति का ही उपाय करते हैं और लक्ष्य तथा प्रयत्न के अनुसार फल भी प्राप्त करते हैं। परन्तु इतनी ही सुख–शान्ति से पूर्ण सुख की प्राप्ति नहीं हो पाती है। उनको तो पुरुषार्थी, विद्वान्, बलवान्, बुद्धिमान्, निरोग, सुन्दर, पुष्ट, दयालु, सदाचारी, कलह और कल्पना रहित दानी; ज्ञानी, घीर, स्थिर बुद्धि, सन्तोषी, क्षमायुक्त होना चाहिए तथा वे सर्व प्राणी मात्र को सुरक्षित और सुखी देखना चाहते हैं। वे मन–इन्द्रियों और माया–प्रकृति के दास नहीं होना चाहते हैं, परन्तु माया–प्रकृति, मन–इन्द्रियों को अपना दास बनाकर इनसे सेवा लेते हैं। जप, यज्ञानुष्ठान और समाधि–साधन आदि महापुरुषार्थ के कार्य जीवनपर्यन्त उनके शुभ कर्म होते हैं। परमात्मा की प्राप्ति रूप महान कार्य सदैव उनका लक्ष्य होता है। जिसके जान लेने पर फिर कुछ भी जानने की आवश्यकता नहीं रहती। सुख–शान्ति की पूर्ण इच्छावालों का यही आदर्श है, वे पाँच क्लेशों से छूट जाते हैं। इस प्रकार सर्व पाप व क्लेशों से छूटा हुआ गुरुमुख, उज्ज्वल, पवित्रात्मा ही ईश्वर–प्राप्ति का अधिकारी है। पाँचों क्लेशों का वर्णन नीचे किया जाता है–

पाँच क्लेशों को त्यागकर, हो जा शुद्ध स्वरूप।
हीरा मिल ब्रह्मज्योति में, पड़ो न भुवन–कूप।।
पाँच क्लेश महाशत्रु हैं, भयदायक दुःखरूप।
हीरा इनसे रहित जो, पावे मुक्ति अनूप।।

पातञ्जल योगदर्शन के सूत्र ३ में भी पाँच कलेशों का वर्णन इस प्रकार हैः–

अविद्यास्मिता रागद्वेषाभिनिवेशाः क्लेशाः।।३।।

अर्थ–अविद्या अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश– ये पाँच क्लेश हैं। ये पाँचों ही भटकाने वाले महादुःखदायक हैं। इन क्लेशों का भाव प्रज्ञानी, गुरुमुख, सत्संगी अभ्यासी योगियों पर बहुत कम

पड़ता है और अज्ञानी निगुरों पर अधिक पड़ता है।

(१) अविद्याः— अनित्य में नित्य, अपवित्र में पवित्र, दुःख में सुख तथा अनात्मा में प्रमाण पाकर भी तथा अनित्य, दुःखरूप क्षणभंगुर जड़ शरीर और भोगों को जानता हुआ भी आत्मा की भावना की प्रतीति होनी अविद्या है। संत—सदगुरु के द्वारा इन बातों का प्रत्यक्षादि जिसके प्रभाव से राग—द्वेषादि कर लेता है, इसी को अविद्या कहते हैं। इसी अविद्या के कारण जीवधारी हाड़—मांस, मज्जा, लार, रक्तादि अपवित्र तथा पाँच महाभूत समुदाय रूप निज शरीर और स्त्री—पुत्रादि के शरीरों को प्रत्यक्षादि प्रमाणों के द्वारा अपवित्र जानते हुए भी पवित्रता का अभिमान करते हैं।

मोह, काम के वश होकर उनके शरीरों से प्यार करता है, इसी का नाम अविद्या (अज्ञान) है। सद्‌गुरुदेव के वचनों द्वारा सांसारिक—भोग दुःख रूप ही हैं, यह जानकर भी सत्संगी मनुष्य उन भोगों को सुखदायक समझकर उनको भोगने में लवलीन रहता है। इस दुःख में सुख की भावना का नाम अविद्या है। यही अभ्यास—ध्यान में अवनति का कारण है।

(२) अस्मिता— आत्मा द्रष्टा, चेतन है और बुद्धि जड़ तथा दर्शन शक्ति है। इन दोनों जड़—चेतन की एकता हो ही नहीं सकती, परन्तु (अज्ञान) अविद्या के कारण दोनों की एकता भास रही है, इसी को अविद्या से आत्मा और प्रकृति का संयोग कहते हैं।

इस प्रकार पुरुष और बुद्धि का भिन्न—भिन्न स्वरूप सद्‌गुरु के ज्ञान द्वारा सम्प्रज्ञात समाधि में जानने में तो आते हैं, किन्तु जबतक निर्बीज—समाधियोग द्वारा अविद्या का सर्वप्रकार से सर्वथा नाश नहीं हो जाता है, तबतक आत्मा—अनात्मा की भ्रान्ति का अभाव नहीं हो सकता है। इसलिए योगाभ्यासी, सत्संगी प्रेमी गुरुमुख को चाहिए कि सद्‌गुरु के वचनों पर पूर्ण श्रद्धा, भरोसा रखकर वैराग्य सहित सुरत—शब्द मिलाप के अभ्यास में उत्साहपूर्वक सर्वसमय तत्पर रहे अथवा शीघ्र अविद्या का नाश करके संयोग—रूप अस्मिता क्लेश का भी नाश कर देवे और कैवल्य पद का अधिकारी बन जावे।

(३) राग—सुखानुशयी रागः (पात०यो०सू०—७) सुख—प्राप्ति की दृढ़ इच्छा का नाम राग है। जब कभी मायावी पदार्थों में से जिस किसी अनुकूल पदार्थ के सुख—भोग की इच्छा होती है और उसकी प्राप्ति के लिए नाना प्रकार के यत्न करने लगते हैं तो इसी को राग नामक क्लेश वर्णन किया गया है। यह राग प्राप्ति—अप्राप्ति में दोनों समय दुःख देता है।

(४) द्वेष— दुःखानुशयी द्वेषः(पात०यो०सू०—८) जब कभी मनुष्य को किसी दुःख या सुख उत्पन्न करनेवाले से घृणा होती है और उससे द्वेष करता है तो इसी को द्वेष—क्लेश कहते हैं।

(५) अभिनिवेश— स्वरसवाही विदुषोऽपि तथारुढोऽभिनिवेशः (पा० यो०सू०—९) जो अटूट स्वभाव परम्परागत अनादि काल से संयोग लिये हुए चला जा रहा है, और जो बड़े—बड़े साधु, परोक्ष ज्ञानी पुरुषों में विद्यमान देखा जाता है, अथवा शास्त्रज्ञानी भी जिससे भयभीत है, वह ही मृत्यु—मरण, भय रूप क्लेश है। इस मरण रूपी क्लेश को सब मनुष्य मात्र जानते हैं कि यह मृत्यु सर्व प्राणियों के लिए अनादि काल से नियमबद्ध है अथवा स्वाभाविक है। परन्तु इतना ज्ञान होने पर भी कोई प्राणी यह नहीं चाहता कि मैं न रहूँ, या मर जाऊँ। सभी सदा ही अपनी विद्यमानता चाहते हैं। अज्ञ—प्रमाण प्राणी भी मरने से डरकर अपनी रक्षा का उपाय करता है। इस मरण से जैसे अज्ञानी जीव भयभीत होता है, वैसे ही विवेकशील शास्त्रज्ञानी पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। इसलिए इसका नाम अभिनिवेश है। हृदयाकाश में सूक्ष्म रूप से बसे हुए अभिनिवेश क्लेशों से सदा के लिए छुटकारा पाने के लिए श्री

शेष पृष्ठ 14 पर.....

अपने जीवन को सात्त्विक बनाओ

प्रातःस्मरणीय पूज्यगुरुदेव श्री श्री १००८ अनन्तश्री विभूषित स्वामी परमज्ञानानन्द पुरीजी महाराज का यह प्रवचन परमपुरी, रोहतास, बिहार में दिनांक ०१.०२.१६८३ को दिया गया था। ''मनुष्य शरीर बेशकीमती है। तुम अगर इसका महत्त्व समझ लो तो तुम्हारा कल्याण हो जाये, अब सत्संग में तो तुम दो घण्टे बैठते हो और बाइस घण्टे कुसंग में रहते हो। अब दो घण्टे के सत्संग का असर क्या करे? दूसरी दफा आते–आते तुम पूरे दुनियादार बने रहते हो। देखो गुरुमुख का दर्जा बहुत बड़ा होता है। उससे बड़ा दर्जा तो किसी का नहीं होता। गुरु महाराज जैसा तुम्हारे लिए कहते हैं, अगर तुम वैसा बनने के लिए प्राण प्रण से तैयार हो जाओ, तो कल्याण तो हो ही जाये।'' –सम्पादक!

आत्म कल्याण की जिज्ञासा को लेकर आये हुए सज्जनों!

बोलो हरि ओम्! हरि ओम्!! हरि ओम्!!!

महात्माओं ने तुम्हें उच्च कोटि के गुरुमुखों की गाथाएँ सुनायी। तुमने सुना कि जिस–जिस ने धर्म के लिए, सत्य के लिए अपने जीवन में कष्ट उठाये उनका जीवन अमृत बन गया। वे आज भी अमर हैं और सदा–सदा तक उनके नाम और गुण लोगों के द्वारा याद किये जायेंगे। तुमने सुना कि गुरुभक्तों को उबलते पानी में डाला गया, चरखियों पर चढ़ा दिया गया। ठीक है, प्रत्यक्ष में उनके शरीरों की दुर्गति तो हुई परन्तु आज भी उनके नाम के सामने दुनिया का सिर झुक जाता है। इसलिए तुम भी अपने जीवन को सात्त्विक बनाओ । उन गुरुमुखों के जीवन तुम्हारे लिए आदर्श स्वरूप हैं। तुम एकान्त में होकर सदैव आदर्श का चिन्तन करो, दिव्य चिन्तन करो। जगत् का चिन्तन, असत्य का चिन्तन तुम्हारे विचारों को कमजोर कर देगा और एक दिन तुम श्रेयपथ से भटक जाओगे। तुम्हारे संस्कार सांसारिक हो जायेंगे। महात्माओं ने अनेक प्रकार के प्रमाणों से तुम्हें दुष्कर्मों के, दुश्चिन्तन के कुप्रभाव को समझा दिया।

मनुष्य शरीर बेशकीमती है। तुम अगर इसका महत्त्व समझ लो तो तुम्हारा कल्याण हो जाये, अब सत्संग में तो तुम दो घण्टे बैठते हो और बाइस घण्टे कुसंग में रहते हो। अब दो घण्टे के सत्संग का असर क्या करें? दूसरी दफा आते–आते तुम पूरे दुनियादार बने रहते हो। देखो गुरुमुख का दर्जा बहुत बड़ा होता है। उससे बड़ा दर्जा तो किसी का नहीं होता । गुरु महाराज जैसा तुम्हारे लिए कहते हैं, अगर तुम वैसा बनने के लिए प्राण प्रण से तैयार हो जाओ, तो कल्याण तो हो ही जाये। हाँ अब बातों–बातों में भी फर्क है। मुझे तो बहुत से नाटकीय ढंग अपनाने पड़ते हैं। मेरे सामने तो तरह–तरह के आदमी आते हैं। मैं उन सबका दिल रखने के लिए तरह–तरह की बात भी करता रहता हूँ। न करूँ तो वे दुबारा आयें भी नहीं। पहले–पहल तो मैं वैसी ही बातें करता हूँ जो तुम्हारे मन को अच्छी लगती है और, मैं. मन को समझने में मास्टर तो हूँ ही। सत्य बात पहले ही नहीं कहता। देखता हूँ, जब तुम आने लगे हो, तुम्हारा मन कुछ–कुछ फंस गया है। तब हौले–हौले सच्ची बात भी कहना शुरू करता हूँ। पूरा फंसने पर तो खरी खरी सुनाता हूँ। सत्य कड़वा तो होता ही है। उसमें भी कुछ–कुछ मुलम्मा लगाना पड़ता है, कुछ रोचक बनाना पड़ता है।

अब एक गुरुमुख होता है, दूसरा मनमुख और तीसरा वेमुख। मनमुख तो वह है जो गुरु धारण करने ही को फिजूल बताता है। कहता है, मंत्र तो किताबों में लिखे ही हैं। क्रियायें सब किताबों से समझकर कर लेंगे। वह नासमझ है, कुछ नहीं समझता। जिस प्रकार घर का छपा

नोट और करेंसी का नोट होता है, उसी प्रकार गुरुमंत्र करेंसी का नोट है। उसपर सरकारी मुहर लगी है। जब तुम सिद्धपीठ से दीक्षा प्राप्त करते हो तभी से तुम्हारे ऊपर उस पीठ के अनेक बुजुर्गों, महापुरुषों की साया हो जाती है। सबकी कृपा तुम्हारे ऊपर हो जायेगी, अगर तुम उन उपदेशों पर चलोगे तो उस पीठ द्वारा प्रदत्त नाम–मन्त्र विशेष गुणकारी इसलिए होगा कि उसकी कमाई करके वहाँ अनेक सिद्ध महापुरुष हो गये हैं। दूसरे गुरुमुख से तो तुम परिचित ही हो। उसे गुरु उपदेश के प्रति अटूट श्रद्धा होती है। उसका अपना मन होता ही नहीं, गुरु का मन ही उसका मन होता है। गुरुमुख गुरु के एक–एक वचन के पालन में अपना जीवन वार जाता है। उसका जीवन धन्य है और, तीसरे बेमुख वे हैं जो गुरुमन्त्र लेकर भी अपने मन की गुरुआई में चलते हैं। उन्हें गुरु उपदेश के प्रति श्रद्धा नहीं होती। उनका मन सदैव संशयग्रस्त और अश्रद्धालु रहता है। वैसे बेमुख तो मनमुखों से भी अधिक जाहिल होते हैं। बेमुख का तो सौ जन्मों में भी उद्धार नहीं होता। वे तो बेकार धरती के भार बनकर जीते हैं ।

खैर, हमारे आदर्श तो उन गुरुमुखों के चरित्र हैं। हमें सिर्फ उनका ही अनुकरण करना चाहिए। तुम गुरु दरबार में आ चुके हो, यह तुम्हारा परम सौभाग्य है। तुम यदि इसका महत्त्व समझो तो तुम्हारा कल्याण रजिस्टर्ड है। यहाँ तो तुम्हें सजा में भी स्वर्ग मिलेगा। जिन्होंने इसका महत्त्व समझा वे कहते हैं–

जे गुरु चरण रेनु सिर धरहीं।
सकल विभव अपने बस करहीं।।

और, हुआ भी वैसा ही। एक भक्त बाबा नानक से मिलने आया, उस वक्त वे खेत में थे। आगन्तुक सूट–बूट, घड़ी–छड़ी में था। चाचा ने उसके सिर पर धान के बीज का एक गठ्ठर उठा दिया। यह खुशी–खुशी कीचड़ से सनते हुए चल पड़ा। किसी ने देखकर माया से कहा, यह भी नहीं देखा कि कितना बड़ा आदमी है। मुफ्त का गुलाम मिल गया, वेचारे को मिट्टी–गारे से सराबोर कर दिया। बाबा ने खट कहा, "मिट्टी तो तेरे लिए है। उस गुरुमुख के लिए तो वह केशर है।" और देखा गया, उस प्रेमी के बदन में केशर ही लिपटा था। आज तुम गुरु दरबार की सेवा में अनेक कष्ट उठाते हो। तुम्हारा हाँथ पानी से खराब हो जाता है। कोई बात नहीं, तुम यहाँ पर तुच्छ सुख देकर अक्षय सुख खरीद रहे हो। इस सेवा में तुम्हारा शरीर भी बिगड़ गया तो बदले में दिव्य शरीर पाओगे। यदि इसे सेवा का महत्त्व समझकर करते हो तो तुम्हारा जीवन अमृत हो जायगा। सुना नहीं, गुरु–दरबार की जूठी थालियाँ मल कर लोग जगत् में पूज्य बन गये। यहाँ झाड़ू लगाकर लोग वहाँ पहुँच गये जहाँ वर्षों तक योग, समाधियाँ लगाने वाले लोग भी नहीं गये। गुरु अमरदास की कथा नहीं सुने पानी में घड़े ढोने से उनके माथे में कीड़े पड़ गये थे। आधी रात में पीछे पाँव चलकर वे गुरुदेव के स्नान का जल लाते थे। एक रात घनघोर वर्षा हो रही थी। तब जल–थल एक से हो रहे थे। उसी तूफान में वे पानी लेकर आ रहे थे। खाई में पाँव पड़ने से घड़ा लिए गिर पड़े। अगल–बगल के लोगों को उनकी यह लीला ज्ञात थी। गिरने से घड़े की आवाज हुई तो किसी बुढ़िया ने अपनी झोपड़ी में से ही कह दिया, 'अमरू निथांवा (अनाश्रित) होगा। जिससे इस रात में भी टहल–ले–लेकर उसके गुरु उसकी जान लिए जाता है।' गुरुमुख के प्रति अपशब्द उच्चारण करते ही वह बुढ़िया गूँगी हो गयी। सबेरे जब खबर महाराज तक पहुँची तब अमरू की सेवा का पता भी चला वरना वह निष्काम सेवा व्रती कब अपनी सेवा का जिक्र करने वाला था? महाराज का हृदय पसीज गया और अमरू को अनेक आशीर्वाद देते हुए कहा, तू अनाश्रितों को आश्रय देनेवाला हो, असहायों के सहायक हो, तू अमरू नहीं अब से गुरु अमरदास हो।' अमरदास को गुरुपद प्रदान किया। उस सेवा ने ही उन्हें गुरु बना दिया।

सच्चे गुरुमुख के आगे तो भगवान का

राज्य झुक जाता है। भगवान भी सच्चे गुरुमुख के आगे नतमस्तक हो गये। भगवान राम के सामने समस्या थी रावण के पास ब्रह्मास्त्र है जिसका वार अमोघ है। भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम थे, उसकी शक्ति को काटकर मर्यादा बिगाड़ते भी नहीं। ऋषि ने कहा, किसी सच्चे गुरुमुख का जूठन (शीत प्रसाद) खाने से ब्रह्मास्त्र का वार निष्फल किया जा सकता है। भीलनी उस समय की अनन्य गुरुभक्ता थी। भगवान ने इसीलिए उस भीलनी का जूठा बेर खाया। लोग उस प्रेम व्यवहार को क्या जानें। लक्ष्मन ने उन बेरों को फेंक दिया। मगर उन्हें भी खाना पड़ा, अन्त–अन्त में कब जब उन्हें शक्तिवाण लगा। संजीवनी बूटी वे बेर ही तो बने थे।

ऋषियों के स्नान का तालाब गन्दा हो गया था। उसमें कीड़े पड़ गये थे। भगवान राम जब वहाँ गये तो बोले, यह मेरे चरणों के स्पर्श से पवित्र नहीं हो सकता। यहाँ किसी गुरुमुख का अपमान हुआ है। बात यह थी भीलनी को उसमें नहाते देखकर ऋषियों ने उस शूद्र जानकर अपमानित किया था। अन्ततः उसी भीलनी ने जब अपना पाँव उस तालाब में डाला तो जल शुद्ध हुआ। इस प्रकार भगवान ने स्वयं गुरुमुख का बड़ा महत्त्व दिखलाया।

अब तुम भी भक्ति के रास्ते में लगे हो। कमियाँ तो सब में होती हैं। कमियों से घबराने की कोई बात नहीं, मगर कमियों को कमी मानों भी तो। अपनी कमियों की सजा के रूप से ही तुम संसार के कैद में डाल दिये गये हो। जैसे सरकारी नियमों के प्रतिकूल चलने वाले जेल भेज दिये जाते हैं, उसी तरह तुम भी जेल में हो। तुमने सत्संग नहीं किया, सत्कर्म नहीं किया, शास्त्रों और महापुरुषों की आज्ञा का पालन नहीं किया। इन्हीं अपराधों से तुम संसार के जेल में पड़े हो। हैं हम सभी कैदी। पहले तो हमारा शरीर ही सबसे बड़ा जेल है। अब कोई हवाई जहाज में चलता है, तो कोई सायकिल से चलता है; कोई लड्डू खाता है, मलाई खाता है तो कोई सूखी रोटी, परन्तु हैं सभी कैद में। कोई ए–क्लास का कैदी है, कोई बी–क्लास का तो कोई सी–क्लास का। जेल में सुख नहीं होता। अपनी–अपनी जगह सभी दुःखी है। सुख किसी को नहीं राजा से रंक तक, विद्वान से महामूर्ख तक। हाँ,

एक–एक दुःख सबन को,सुखी सन्त का दास।

यदि दुःखों से छूटना चाहते हो तो गुरुमुख बनो। संवक को ही सबसे बड़ा सुख है। यदि इस जेल से नहीं निकलना है तो करो मनमानी, खाते जाओ जहरीले लड्डू।

मूरख ह्रदय नचेत जौंगुरु मिलहिं बिरंचि सम।

मूरख किसे कहते हैं। जिसने किताबें नहीं पढ़ी हैं, स्कूल नहीं किया है, केवल वह मूर्ख नहीं है, बहुत पढ़ा–लिखा भी महान् मूर्ख हो सकता है। बुजुर्गों ने कहा है–

काम क्रोध मद लोभ का,जब लगि मनमें खान।
तव लगि पंडित मूरखा, दोनों एक समान।।

तुम्हारी महिमा तो तब है जब तुझसे ये दोष निकल जाये। जब जेल ही घर नजर आने लगे तो तुम्हें कौन छुड़ा सकता है? आज तो अवारे जेल से आते हैं तो कहते हैं, 'ससुराल गये थे।' छुट्टी का मतलब मरना मत समझ लेना। मर जाने से दुनिया छूट नहीं जाती। मर कर भी बार बार आना पड़ता है, गदहा, कुत्ता, सूअर, बिल्ली, मूस, जो बनकर आओं। क्योंकि यहाँ, जेल से मन जो लगा बैठे हो। आसक्त हो गये ही इससे। अधर्म को धर्म मान बैठे हो। लोग कहते हैं स्त्री का गुरु उसका पति होता है। पर कैसा पति ? राम जैसा। क्या चोर, जुआरी, परस्त्रीगामी, शराबी, लोभी, धूर्त, पति भी भगवान हो जायगा? मरते वक्त मन जहाँ जाता है, जन्म वहीं होता है। स्त्री का मन मरते वक्त वैसे ही पति में चला जाये तब तो हो गया बेड़ा पार। पहले की पत्नी पति में अपना मन लगाती थी और पति भगवत्परायाण होते थे। उनका मन एक पल भी सत्य से नहीं हटता था। अब तो पत्नी अपना मन पति में देवे, उधर पतिदेवता का मन है दुकान में, शराब की भट्ठी में, पराये धन में। फिर पत्नी मर कर दुकान की चूहिया ही तो

बनेगी।

इसलिए सच्चाई को ठीक से समझो। लकीर का फकीर बनना, ठीक नहीं होता। शास्त्र की बातें स्वयं तुम्हारी समझ में नहीं आयेंगी। इसीलिए शास्त्र को पहले गुरुमुख से सुनना चाहिए। गुरुमुख बनकर ही असलियत को समझा जा सकता है, मुक्ति–गति प्राप्त की जा सकती है ।

सेवक सेव्य भाव बिनु भव न तरिय उरगारि।

'जय गुरु, आशीर्वाद'!

*

पत्रिका प्राप्ति हेतु सहयोग राशि

एक प्रति :

25.00 (पच्चीस रु0)

वार्षिक :

251.00 (दो सौ एक्यावन रु0)

त्रैवार्षिक :

751.00 (सात सौ एक्यावन रु0)

पंचवार्षिक :

1251.00(एक हजार दो सौ एक्यावन रु0)

दसवार्षिक :

2551.00(दो हजार पांच सौ एक्यावन रु0)

आजीवन :

5001.00 (पाँच हजार एक रु0)

संरक्षक :

7501.00 (सात हजार पाँच सौ एक रु0)

विशेष संरक्षक :

11111.00 (ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह रु0)

नोट :– आजीवन सदस्य का नाम, पता, संरक्षक का फोटो, वायोडाटा तथा विशेष संरक्षक का फोटो, वायोडाटा एवं उनसे संबंधित विशेष परिचियात्मक विवरण पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा। पूर्व में सदस्यता प्राप्त आजीवन सदस्य, संरक्षक एवं विशेष संरक्षक पूर्व में भुगतान की गई राशि वर्द्धित दर से घटाकर शेष राशि का भुगतान कर अपनी सदस्यता अवश्य नवीनीकृत करा लें। सम्पर्कसूत्र–

7372000511, 7372000512, 7060862109, 9334319012, 9430930168, 8986373548

पृष्ठ–10 का शेष भाग.....

सद्‌गुरुदेवजी का सुमिरन–ध्यान, भजन की युक्ति के द्वारा चित्तवृत्ति को अजपा–गायत्री व परमेश्वर की ज्योतिर्मय छवि में और अनहद शब्द जो शुद्ध, पवित्र धुनात्मक अखण्ड शब्द है, के श्रवण में निर्वाज समाधि के द्वारा कम से कम नाम, शब्द, रूप में लगावे। सेवा रूपी कर्मयोग से या अभ्यास–योग द्वारा ही सर्वक्लेशों का सर्वथा नाश होता है। अतः सुमिरन, ध्यान का अभ्यास अत्यन्त दृढ़तापूर्वक करना चाहिए। इस प्रकार राग–द्वेष रहित निष्काम कर्म करनेवाला योगाभ्यासी सर्वक्लेशों से छूटकर मुक्त हो जाता है। क्योंकि जन्म की जड़ मूल बीज पाँच क्लेश ही हैं, जैसे पात० यो० दर्शन के साधन पाद के तेरहवें सूत्र में कहा गया है–

सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः।।१३।।

अर्थ– अविद्यादि मूल के विद्यमान रहने तक उस (कर्माशय) का परिणाम पुनर्जन्म, आयु और भोग होता रहता है। जबतक अभ्यासी के हृदय– कमल में अविद्यादि क्लेशों की जड़ विद्यमान रहती है, तबतक महान, प्रबल पाप–पुण्य कर्मों के संस्कार समुदाय रूप कर्माशय का विपाक अथवा परिणाम बारंबार ऊँच–नीच, मनुष्य, कीट–पतंग आदि अच्छी या बुरी योनियों में जन्म लेना और निश्चित आयु तक कर्मों का फल सुख–दुःख भोगकर जीवित रहना, पुनः मरण–दुःख को भोगना– इस प्रकार कर्मों का फल जन्म, आयु, भोग होते ही रहते हैं, और यह जन्म, आयु, भोग तीनों ही हर्ष–शोक–मोह रूप फल को देनेवाले होते हैं। क्योंकि हर्ष, शोक, मोह के पाप और पुण्य कर्म ही कारण हैं। इसलिए सुमिरन, ध्यान, भजन के नित्य दृढ़ अभ्यास के द्वारा पाँचों क्लेशों को मूल अथवा जड़ सहित छेदन करना चाहिए। इसी से अभ्यासी गुरुमुख की पूर्णतः मुक्ति हो सकती है; क्योंकि गुरुमुख भक्त गुरुकृपा के द्वारा भली भाँति चित्तवृत्ति निरोध व राजयोग को जानता है।

''ऊँ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!'' *

प्रवचन पीयूष :–

'कथनी और करनी का मेल करो'

प्रस्तुति– स्वामी अखण्डानन्दपुरीजी

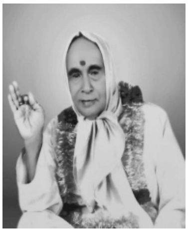

पूज्यपाद ब्रह्मलीन स्वामी भास्करानन्दपुरीजी महाराज के द्वारा यह प्रवचन नरही, बलिया, उत्तर प्रदेश में दिनांक २३.०३.१०८७ को दिया गया था। श्री स्वामीजी महाराज ने कहा कि–'श्री गुरु महाराज जी ने फरमाया– ''रावण में सिर्फ चार बातों की ही कमी थी बाकी तो सब उसमे गुण ही गुण थे। चार कमी क्या थी– पहला वह दूसरे के धन, जन और स्त्री का हरण करता था। दूसरा मांस और मदिरा का सेवन करने वाला था। तीसरा किसी के आगे वह झुकना नहीं जानता था और चौथा राम और शंकर में भेद समझता था। तो क्या आज हम सब लोगों में यह कमी है या नहीं? फिर हम भला कैसे राम के भगत हो सकते हैं?'' – सम्पादक!

प्रभु के अनन्य प्रेमी भाइयों, और बहनों!

आप सभी को सर्व प्रथम मैं श्री गुरु महाराज जी की ओर से आशीर्वाद देता हूँ। आप का मानव तन पाना सफल हो। सत्संग और गुरु शरणागति में आना सफल हो। अभी अभी आपने डाक्टर तुरीयानन्द जी के सत्संग को धौर्य से सुना। सुनाने में कोई कोर कसर नहीं रखता। आप भी सुने परन्तु उस सुने हुए को अपने जीवन में उतारें। एक बार महाराज जी से किसी ने पूछा महाराज! सन्तों का काम बोझा को हल्का करने का फिर आपने बोझा हलका न करके एक और बोझ बढ़ा ही दिया। क्योंकि ४ वेद शास्त्र और अठारह पुराण पहले ही से थे फिर आपने ११ सौ पृष्ठों का रामायण लिख कर एक बोझ और बढ़ा ही तो दिया। महाराज जी ने कहा–बेटा! सच बात यह है रामचरित मानस यह बाहर का विषय नहीं है। यह तो मानस का विषय है। अर्थात् तुम राम के चरित्र को अपने मन–मन्दिर में बैठा लो। केवल बाहर राम–राम न कहो, बल्कि राम के चरित्र को अपने जीवन में उतार लो। संसार में जितनी भी चीजें है वह आपके अन्दर भी हैं। उसी का रूप बाहर भी देखा जाता है। **'जो पिण्डे सो ब्रह्माण्डे!'** दूसरी बात यह है कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने जो रामचरित मानस लिखा यह कथा का महात्म्य ऐसा है–**विमल कथा कर कीन्ह अरम्भा।**
सुनत नसाहि काम मद दम्भा ।।

जो इस कथा को सुनेगा उसका काम क्रोध दंभ नष्ट हो जायेगा। मानव की सबसे बड़ी कमजोरी काम, क्रोध और दम्भ है जो मानव को दानव बनाने का मूल जड़ है। तुलसी दासजी ने राम की कथा को इस ढंग से इस काबिलियत से रखा कि राम के अन्दर काम–क्रोध दम्भ कुछ भी नहीं रहा। वे जो कुछ भी कार्य किये थे स्वाभाविक ही किये। राम के चरित्र को गोस्वामी जी ने इस तरह रखा कि वे कोई दैवी शक्ति से नहीं वरन् मानवी शक्ति से पुरुषार्थ करके किया। अर्थात् हम मानब भी यदि चाहें तो वैसा करके राम के चरित्र को अपने चरित्र में उतार सकते हैं। यदि हम बैसा कर सकें तो हम राम कथा को सुने। अभी आपने सुना, सुनने में आपने कोई कोर–कसर नहीं रखा। यदि आप नहीं भी सुनना चाहें तो भी रामनवमी के अवसर पर लाउडस्पीकर के द्वारा जगह–जगह राम चरित मानस सुना दिया जाता है। इस तरह किसी न किसी तरह से आपने रामचरित को सुना तो जरूर परन्तु आपने उसे ठीक से मनन नहीं किया। अपने मानस में उतारा नहीं। कंठ में भले ही उतार लिया हो। राम की लीला भी देखते हैं। राम के चरित्र को सुनते हैं फिर भी आप रावण बनते जा रहे हैं।

रावण के बारे में आप जानते हैं–रावण विशेश्रवा का पुत्र था। पुलस्त ऋषि ब्रह्मा के पुत्र थे। ब्रह्मा की चौथी पीढ़ी दानव हो गयी और हम मानव कितने पीढ़ी पीछे हीं रह गये। उसके अन्दर क्या थी कि यह राख हो गयी। एकतरफ तो वह इतना बड़ा भगत था कि यह अपना सिर काटकर ही भगवान शंकर को चढ़ा देता था। स्वयं ब्रह्मा ने

ही उसे विद्या पढ़ाया था। इससे वह बड़ा विद्वान भी था। कर्म काण्ड का आचार्य था। चारो वेदों का ज्ञाता था। शंकर की प्रतिष्ठा कराया, इतना बल और पौरुष में इतना शूरवीर था कि एकबार सोचा शंकर का दर्शन करें तो वह कैलास पर्वत को ही उठा लिया। आज हमारे अन्दर रावण जैसा बल पौरुष नहीं है, रावण के ऐसा विद्वान भी नहीं हैं। रावण के जैसा भगत भी नहीं है लेकिन अहंकार में रावण से कम नहीं है। रावण के अन्दर जो कमजोरी थी वही कमजोरी हमारे अन्दर है। रावण में क्या कमी थी?

श्री गुरु महाराज जी ने फरमाया कि रावण में सिर्फ चार बातों की ही कमी थी बाकी तो सब उसमे गुण ही गुण थे। चार कमी क्या थी– पहला वह दूसरे के धन, जन और स्त्री का हरण करता था। दूसरा मांस और मदिरा का सेवन करने वाला था। तीसरा किसी के आगे वह झुकना नहीं जानता था और चौथा राम और शंकर में भेद समझता था। तो क्या आज हम सब लोगों में यह कमी है या नहीं? फिर हम भला कैसे राम के भगत हो सकते हैं? राम की कथा को पढ़कर हम रावण होते जा रहे हैं, ऐसी बात क्यों हो गई? इसलिये कि हमें रामचरित मानस की महिमा को समझने के लिये अपने को तुलसी दास जैसा बनाना पड़ेगा। आप जैसे ही तुलसीदास जैसा बनेंगे वैसे ही आपकी बुद्धि भी तुलसीदास जैसी बन जायेगी। तब आप रामायण के उस गूढ़ रहस्य को समझ पायेंगे।

एकबार मैंने धर्मयुग में पढ़ा था– एक चौपाई का सोलह प्रकार का अर्थ छपा था। जितने विद्वान थे वे अपने अपने भावानुसार लिखे थे। यहाँ तक उसमें लिखा था कि चौपाई का एकलाख चार हजार तरह का अर्थ होता है। वह चौपाई है–

सबके मत खग नायक एहा,
करिये राम पद पंकज नेहा।

भला तुलसी बाबा रामायण लिखते हुए इतनी बात रखे होंगे? उन्होंने तो सरल स्वभाव से अपनी बात को लिखा है। परन्तु हम सब अपनी अपनी भावनाओं के अनुसार ही अर्थ निकालते हैं। रामायण में सब कुछ है। वह नवरसों से परिपूर्ण है। उसमें राजनीति, परिवार, संसार में रहने की सभी कलायें हैं। रही बात जो जिस चीज का रसिक होता है वह उसे ही ग्रहण कर लेता है। परन्तु उनके लिखने का भाव यही था कि इस कथा को जो सुनेगा वह राम जैसा बनेगा ।

परन्तु उस कथा का असर विपरीत पड़ने का एक कारण यह भी है कि हम उस कथा को उसके द्वारा सुनते हैं जो स्वयं काम, क्रोध, दम्भ से युक्त है। भला शराबी कहे कि शराब न पीओ तो सुनने वाले पर उसका कुछ प्रभाव पड़ेगा? गुरु महाराज ने फरमाया– 'कथनी और करनी का मेल करो।' फिर जब तुम जो कहोगे तब लोग उसे अवश्य मान लेंगे। आज लोग कहते हैं पर सुनने वालों पर कोई असर नहीं पड़ता क्यों? इसलिये कि **जुबांसे बात करनेमें,हरेक होशियार काफी हैं। मगर गुफ्तार पर रखता कोई रफ्तार वाकी है।**

कोई आदमी अपने करनी और कथनी का मेल हीं रखता है। यही तो दम्भ है यही तो पाखण्ड है। रामायण के प्रसंग में आप सभी जानते हैं कि धनुष–यज्ञ हुआ तो उसमें –

देव दनुज धरि मनुज शरीरा,
विपुल वीर आये रणधीरा।।

इसका मतलब यह कि ऊपर से आदमी थे परन्तु वे थे देवता। अन्दर से थे राक्षस और ऊपर बने थे मानव। मानव ऊपर से थे दानव भीतर से, इस तरह उन सभी के अन्दर पाखण्ड–दम्भ था। उनके कथनी और करनी में मेल नहीं था। यही कारण तो था कि वे धनुष को तोड़ने की कौन कहे थेः–**'तिलुभरि भूमि न सके छुड़ाई।'** क्योकि ये सभी पाखण्डी थे। भीतर बाहर एक नहीं थे। इसी से जब वे धनुष तोड़ने के लिये उठते थे तो 'अकुला' कर उठते थे। **'परिकर बांधि उठे अकुलाई चले इष्ट देवन सिरनाई।'** इधर भगवान राम गुरु की आज्ञा मानकर चलते हैं। सहज स्वाभाविक भाव से

शेष पृष्ठ 20 पर....

प्रवचन सुधा :–

ईश्वर कृपासिद्ध है, साधनसिद्ध नहीं।

प्रस्तुति– स्वामी प्रज्ञानन्दपुरीजी

पूज्यपाद महामण्डलेश्वर ब्रह्मलीन स्वामी केशवानन्दपुरी जी महाराज का यह प्रवचन दिनांक १७.०३.१९९६ को श्री अद्वैत स्वरूप आश्रम, गढ़वा में दिया गया था। श्री स्वामी जी महाराज ने अपने इस व्यख्यान में फरमाया है कि–"जबतक मन में जगत् का प्रतिबिम्ब है, तबतक दुःख नहीं छूट सकता। मन के निर्मल होने पर अपने इष्ट की मूर्ति आसानी से हमारे मन में प्रतिष्ठित होगी। यह राम–कृष्ण–शिव आदि की मूर्तियाँ हो सकती हैं पर ध्यान के लिए गुरु मूर्ति ही सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि इस मूर्ति को आपने देखा है और इसलिए यहाँ आपका ध्यान आसानी से जम सकता है। चैतन्य मूर्ति का ध्यान करना चाहिए, जड़ मूर्ति पत्थर की मूर्ति आदि का नहीं। गुरु की मूर्ति का चैतन्य रूप में ध्यान करो–जैसे उन्हें चलते–फिरते, बोलते–खाते–शयन करते देखा है। ध्यान कहाँ करना चाहिए, तो योग में, नाभि में, ध्यान श्रेष्ठ, भक्ति में, हृदय का ध्यान और ज्ञान में, त्रिकुटी का ध्यान। श्री गुरु महाराजजी अब सशरीर बिराजमान नहीं हैं, पर अभी भी दृढ़ निष्ठावानों को उनके दर्शन हो जाते हैं। " – *सम्पादक!*

सभागत सत्संग प्रेमियो,
माताओ बहनों और बच्चों!
आप सबको श्री गुरु महाराजजी का आशीर्वाद!

अभी आप सभी सत्संग में बैठे हैं। सत्संग की बड़ी महिमा गाई गई है। गुरु नानक देवजी की वाणी हैः–

साधसंगत सुख उपजे, साधसंगत दुख जाय।
सहजे सहजे रे मना, सुख में रहो समाय।।
साधसंगत मुख उज्ज्वल होये।
साधसंगत मन कल्मष धोये।।
संत मिले तामें जीवाँ।
संत के चरन धोय धोय पीवाँ।।

साधुसंगति से मन का कल्मष खत्म हो जाता है। कल्मष अर्थात् मलिनता या कालिख। यह कालिख साधुसंगति से धोई जा सकती है। सत्संगति का फल तत्क्षण ही मिल जाता हैः–

मज्जन फल पेखिय तत्काला।
काक होय पिक बकउ मराला।।

कौए की बोली बड़ी कर्कश होती है। काकवृत्ति का व्यक्ति जब भी बोलता है, दूसरों को कष्ट ही पहुँचाता है। कोयल की बोली में बड़ी मिठास होती है। ऐसा व्यक्ति बोलकर दूसरों को सुख पहुँचाता है। सत्संग के प्रभाव से कौआ–वृत्ति का व्यक्ति कोयलवृत्ति का बन जाता है। इसी तरह बगुला–वृत्ति का व्यक्ति बगुले की तरह मछली अर्थात् सांसारिक भोगों में ही मन को लगाये रहता है। पर सत्संग के प्रभाव से उसकी बुद्धि की दिशा भी बदल जाती है और वह विवेकमान हो जाता है– बगुला हंस बन जाता है। हंस विवेकी पक्षी है और दूध तथा जल के मिले रहने पर वह दूध को अलग करके पी जाता है। इस तरह सत्संग की महिमा अपार है।

ईश्वर कृपासिद्ध है, साधनसिद्ध नहीं। एकाध को छोड़कर आजतक सभी कृपा के बल पर ही ईश्वर को प्राप्त कर सके। पर इसके लिए कृपा पात्र या कृपा के योग्य बनना पड़ेगा। कृपा पात्र का सहज ही उद्धार हो जाता है। कृपा पात्र बनने के लिए अपने आहार–व्यवहार को बदलना पड़ेगा। सात्विक आहार से हमारी बुद्धि शुद्ध होगी और सबके साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करने से हम भगवान की ओर अनायास ही बढ़ चलेंगे।

माया सारे जगत को नचाती है। उसी साधन के द्वारा मायापति भगवान् चराचर जगत् को नचाते हैंः–

उमा दारु जोषित की नाई।
सवहिं नचावत राम गोसाईं।।

'मा' का अर्थ है 'नहीं' और या' का अर्थ है जो – जो है ही नहीं। यही तो माया है। तात्त्विक दृष्टि से देखने पर माया का अस्तित्व ही नहीं है। वह व्यापती है उसे जो राम का कृपा–पात्र नहीं है। राम का कृपा पात्र बन जाने से उसका कोई असर हो ही नहीं सकता।

माया ठगिनी है, वह सबको व्याप सकती है। कहा हैः–

माया तो ठगनी भई, ठगत फिरा सब देस।
जिस ठग ने ठगनी ठगी, उसी ठग को आदेस।।

माया ऐसी ठगिनी है जो ब्रह्मा–विष्णु–महेश को भी ठग लेती है। पर परमेश्वर पर उसका कोई बश नहीं चलता, क्योंकि वह स्वयं ही महा ठग है। एक और बात है उसे ठगाने में बड़ा सुख मिलता है। इसके बारे में एक सुन्दर दृष्टांत है।

एक धनी व्यक्ति था। उसके पास काफी जमीन थी। उसने उसमें से एक बीघा जमीन बाबा भोले को दे दी। पर बाबा के पास तो हल था नहीं. और बैल भी एक ही, सो वह खेत बहुत दिनों तक वैसे ही पड़ा रहा। एक किसान को उसे देखकर लोभ जगा। वह बाबा से बोला "बाबा आपसे तो खेती हो नहीं रही है। अच्छा होता, आप मुझे यह खेत बटाई पर दे देते।" भला बाबा को क्या एतराज हो सकता था। जब फसल तैयार हो गई तो किसान ने बाबा से पूछा– ऊपर से फसल लेंगे या नीचे से? बाबाने सोचा ऊपर से लेने में ही फायदा होगा. सो उन्होंने ऊपर से मांगा। उस साल के हिस्से आलू के पौधे आये। बाबा को भी लगा कि बड़ा घाटा हो गया। इसीलिए दूसरे साल उन्होंने नीचे से लिया। पर इस बार किसान गेहूँ उपजाया था, सो बालियाँ अपने घर ले गया और जड़े बाबा को दे गया। अब बाबाने सोचा कि ऊपर–नीचे दोनों ही क्यों न ले लें–बीच का भाग उन्होंने किसान के दिया। पर उस साल किसान ने मक्का उपजाया था, सो सारे दाने उसके हिस्से आ गये और बाबा को मिला सिर्फ ऊपर नीचे का बेकार भाग। भगवान् इस तरह ठगी से बडा सुखी होते हैं, भक्त के साथ लीला करने में तो उन्हें बड़ा मजा आता है।

हम कैसे माया के जाल से बचें, कैसे हमारा कल्याण हो ? हमको चौरासी के इस चक्कर से बचा सकते है सद्गुरु ही। पर, इसके लिए गुरु पर पूर्ण निष्ठा होनी चाहिए। अर्थात् गुरु को ही परमेश्वर मानना पड़ेगा :–

गुरु परमेश्वर एको जानो यह गुरुज्ञान बताई।

गुरु और भगवान् में कोई अन्तर नहीं– जिसने यह पक्की धारणा बना ली, उसका उद्धार सुनिश्चित है। वास्तव में गुरु के परे कोई परमतत्त्व है ही नहीं। गुरु हैं मंत्र रूप, मंत्र ने ही हमारे कल्याण के लिए गुरुमूर्ति धारण की है।

संसार के बन्धनों को काटने के लिए गुरु शरणागति अनिवार्य है। ये बंधन दो तरह के हैं। एक तो हमने जो अपने पराये के आधार पर पुत्र– पत्नी–जाति आदि के संबंध बना रखे हैं और दूसरे हमारे मन में पलनेवाले काम–क्रोधादि। गुरु की सेवा से संसार के स्थूल बंधन टूट जाते हैं और उनके द्वारा प्रदत्त मंत्र के प्रभाव से मन निर्मल हो जाता है।

मोटे बन्धन जगत के, गुरुभक्ति से काट।
झीने बन्धन मन के, कटे नाम परताप।।

गुरु और परमेश्वर में अभेद बुद्धि हो जाने से गुरु वचनों में स्वाभाविक प्रेम पैदा होता है, जिससे जीव का उद्धार हो जाता है।

संतों की महिमा का वर्णन कौन कर सकता है। मीरा ने गुरुकृपा से ऐसी स्थिति प्राप्त कर ली कि वे अंत में द्वारकाधीश के विग्रह में समा गयी। गुरु नानक अंतिम समय आने पर चादर ओढ़कर लेटे और जब चादर हटाई गयी तो वहाँ उनके शरीर के बदले में दो फूल मिले। एक फूल पर हिन्दुओं ने समाधि बनाई और दूसरे को मुसलमानों ने दफना दिया। पंजाब में लाली शाह नामक एक फ़कीर हुए हैं। वे बेड़ा लेकर किसी के भी खेत में डेरा डाल देते थे। खेत वाला ही अपना परम सौभाग्य मानता था और उनको सब तरह से खातिर करता था। वास्तव में पंजाब–हरियाणा

हिमाचल–गुजरात में संत महापुरुषों का बड़ा आदर होता है। बावा कभी हिन्दुओं के खेत में होते थे, कभी मुसलमानों के खेत में। एक दिन लोगों ने पाया–बाबा ने शरीर छोड़ दिया है। पर उनका शरीर किसी खेत में नहीं, एक पेड़ पर पाया गया। अब हिन्दू–मुसलमानों में बड़ा विवाद शुरु हुआ हिन्दू उनकी लाश को जलाना चाहते थे. मुसलमान दफनाना। जब खूनी टक्कर की नौबत आ गई, बाबा राम–राम कहकर खड़े हो गये और दोनों पक्षों को बड़ा फटकारा। १२ वर्षों के बाद एक दिन राबी के तट पर भजन करते लुप्त हो गये। आज भी हिन्दू–मुसलमान एक साथ मिलकर बड़े प्रेम से उनका उत्सव मनाते हैं। कहने का अर्थ हैं कि संत–सद्गुरु की सामर्थ्य का वर्णन करना कठिन है।

आज कई भक्तों ने जिज्ञासा की– कैसे जल्दी आध्यात्मिक रास्ता तय हो सकता है। तो इसके लिए सबसे सुगम उपाय है–गुरुमूर्त्ति का ध्यान। आपकी प्रीति गुरुमूर्त्ति में नहीं जागती, क्योंकि आप उन्हें हाड़–मांस ही मानकर चल रहे हैं। इसके लिए दृढ़ भाव जगाना होगा कि गुरु ही परमेश्वर हैं। ऐसा भाव होने से उनके चरणों में सच्ची प्रीति जगेगी, उनकी कृपा पर विश्वास होगा। मन में गुरुमूर्त्ति को बैठाने से ही कल्याण संभव है। अभी तो हमारे मन के दर्पण में जगत् प्रतिबिम्बित हो रहा है। जबतक मन में जगत् का प्रतिबिम्ब है, तबतक दुःख नहीं छूट सकता। मन के निर्मल होने पर अपने इष्ट की मूर्त्ति आसानी से हमारे मन में प्रतिष्ठित होगी। यह राम–कृष्ण–शिव आदि की मूर्तियाँ हो सकती हैं पर ध्यान के लिए गुरु मूर्त्ति ही सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि इस मूर्त्ति को आपने देखा है और इसलिए यहाँ आपका ध्यान आसानी से जम सकता है। चैतन्य मूर्ति का ध्यान करना चाहिए, जड़ मूर्त्ति पत्थर की मूर्त्ति आदि का नहीं। गुरु की मूर्ति का चैतन्य रूप में ध्यान करो–जैसे उन्हें चलते–फिरते, बोलते–खाते–शयन करते देखा है। ध्यान कहाँ करना चाहिए, तो योग में, नाभि में, ध्यान श्रेष्ठ, भक्ति में, हृदय का ध्यान और ज्ञान में, त्रिकुटी का ध्यान। श्री गुरु महाराजजी अब सशरीर बिराजमान नहीं हैं, पर अभी भी दृढ़ निष्ठावानों को अभी भी उनके दर्शन हो जाते हैं। २८ अक्टूबर को समष्टि भंडारा रखा गया। बिहार से पत्र आया–यहाँ से कोई मदद संभव नहीं। फिर भी मैं निश्चिन्त था बैंक में पौने तीन लाख रुपये जमा जो थे। पर बैंक गया, तो पता लगा–जिस महात्मा के साथ साझा खाता था, वह दो दिन पहले ही सारे पैसे निकाल ले गया था। मैं उदास होकर कमरे में खुली आँखें बैठा था, उसी समय दरवाजे पर श्री गुरु महाराजजी प्रकट हो गये। उन्होंने मुझे कुरेदते हुए कहा–"क्यों चिन्ता करता है. कुल २६ हजार रुपये की ही बात है!" उसी समय डाकिये ने एक चिट्ठी दी। श्रीनगर से जनेऊ करवाने के लिए निमंत्रण आया था, साथ ही हवाई जहाज से आने–जाने की टिकट भी थी। श्रीनगर गया वहाँ पर मुझे लेने के लिए लोग आये थे। सिर्फ उपनयन के लिए ५ हजार मिले, एम०सी०पंत ने ५ हजार दिये और भी दस हजार मिले। २१ तारीख को दिल्ली लौटा तो गोविन्दरामजी ने १० हजार और हरिपाल जी ने ५ हजार दिये और इस तरह मेरे पास कुल ३५ हजार रुपये जमा हो गये। भंडारे पर २६ हजार रुपये ही खर्च हुए। इस तरह हम लोगों पर गुरु महाराजजी की कृपा की सतत वर्षा हो रही है। वे सदा हमारे अंग संग है। वे आध्यात्मिक रास्ता ही नहीं तैयार करते हमारी दुनियावी दिक्कतों को भी दूर करते हैं। एक बार एक आदमी का जहाज डूब रहा था। उसने प्रार्थना की जहाज बच गया तो मैं गुरु महाराजजी को पाँच अशर्फियाँ चढ़ाऊँगा। जहाज बच गया। अशर्फियों के लोभ में बहुत–से नकली गुरु भी आसन मारे बैठे थे। भक्तने सोचा जो सही गुरु होंगे वे स्वयं मुझे पुकार लेंगे। असली गुरुजीने उसे पुकारकर कहा–"ला मेरी अशर्फियाँ क्योंकि मैंने कछुआ बनकर तुम्हारे जहाज को सहारा दिया था, जिससे वह डूबने से बच गया था।" उन्होंने जब बदन उधारा पीठ पर जहाज उठाने का दाग था। गुरुमूर्त्ति के ध्यान से मन की उछल कूद बंद

हो जाती है. पवित्रता की धारा बहने लगती है। जिसने भी गुरुमूर्त्ति का ध्यान किया, उसका मन शुद्ध होकर रहा। जैसे दूध में नाममात्र का दही डालने से सारा दूध दही बन जाता है, उसी तरह गुरुमूर्त्ति के ध्यान से मन में शुद्धता भर जाती है और जीव का कल्याण हो जाता है। धीरे–धीरे साधक गुरुरूप में ही बदलने लगता है। जो जिसका ध्यान करता है, वह उसी तरह का हो जाता है। गुरु–मूर्त्ति के ध्यान से साधक में गुरु के सारे गुण प्रवेश करने लगते हैं। इसीलिए तो कहा गया हैः

गुरुजी को कीजिये दंडवत,कोटि–कोटि परनाम।
कीट न जाने भृंग को,गुरु कर ले आप समान।।

यह भृंगी योग है। भृंगी नामका कीड़ा गोबरवाले सफेद कीड़े को बिल में बंदकर बाहर से भौं–भौं की आबाज करता है, जिसके डर से बिल का कीड़ा भृंगी का चिन्तन करते–करते अंत में उसी रूप में बदल जाता है। इसतरह गुरु महाराजजी के सतत चिन्तन–स्मरण से हम गुरुरूप ही हो जायेंगे। जब हृदय में वे बैठ जायेंगे, तो बाहर भी हर जगह वही दिखाई देंगे। **'बोलिये श्री गुरुमहाराजजी की जय '।। हरि ओऽम् तत्सत् ।।***

पृष्ठ 16 का शेष भाग....

यथा–

गुरु पर बंदि सहित अनुरागा,
राम मुनिन्ह सन आयसु माँगा।
सहजहिं चले सकल जग स्वामी,
मस्त मंजू वर कुंजर गामी।।
'गुरहि प्रनाम मनहि मन कीन्हा।'

अब यहाँ ध्यान दें। जो मैंने पूर्व में कहा था कि यह मानस है। भीतर धारण करने का है ऊपर दिखाने का नहीं और लोग ऊपरी विनय करते थे भीतर कुछ और था। सहज भाव नहीं था। परन्तु राम के अन्दर स्वाभाविक भाव था। यही कारण था कि राम उस शंकर धनुष को तोड़ने का लाभ उठा सके। विश्व विजयी बन सके ।

मनु महाराज ने घोर तपस्या किया। भगवान ने जब पूछा– क्या चाहते हो? तो उन्होंने कहा–

'चाहउ तुमहि समान सुत'

क्योंकि उन्हें मानव के कल्याण के लिये ऐसे चरित्र नायक की आवश्यकता थी, उसके चरित्र को सहज में मानव अपने चरित्र में धारण कर अपना, अपने समाज का, अपने राष्ट्र का एवं सम्पूर्ण जगत का कल्याण कर सकता है। भगवान ने भी कहा – **'आप सरिस कहँ खोजहूं जाई'**

इसलिये में स्वयं ही राम के रूप में महाराज दसरथ जी के घर में अवतार लूंगा। इस तरह राम का चरित्र स्वयं आदर्श था और जो उस चरित्र को मनन करेगा तब काम बनेगा। गोस्वामीजी ने लिखा है–

नाना पुराण निगमागम सम्मतंयद।
रामायणे निगवितं क्वचिदन्यतोऽपि।।

अर्थात् इसमें सभी निगम आगम का सम्मत है इसके अतिरिक्त कुछ और भी है। कुछ और का मतलब गुप्त रहस्य है। उस गुप्त रहस्य को समझने के लिये उसके भेदी से मिलना होगा। बिना भेदी के मिले उस रहस्य का भेद नहीं प्राप्त होगा। आप सभी किसान हैं जानते हैं कि जब धान की फसल की ढेरी बनाई जाती है तो उसके ऊपर एक गोबर की पोटली पुआल के साथ लपेट कर रखा जाता है। जिसे हमारे यहाँ 'बढ़ावन' कहा जाता है। लोगों का मानना है कि धान को यही बढ़ाता है परन्तु सच यह है कि गुप्त रहस्य यह है कि यही गोबर यदि खेत में डालोगे तो धान की फसल बढ़ेगी। यदि धान की ढेरी पर खूब गोबर का बढ़ावन रखो और खेत में गोबर नहीं डालोगे तो फसल नहीं बढ़ेगी। यही तो गुप्त रहस्य सन्त सद्गुरु लखाते हैं। ठीक उसी तरह सद्ग्रन्थ में सार तत्व हैं उसे हम बाहर से पढ़ते हैं मानस में उतारते नहीं। जब तक उन ग्रंथों के सार रूपी गोबर को हम अपने मानस रूपी क्षेत्र में नहीं डालेंगे तब तक हमारे अन्दर विवेक वैराग्य सदाचार आदि के फसल नहीं बढ़ा सकते हैं।

बोल **''श्री गुरु महाराज को जय''!**

*

सत्संग सुधा :–

गुरु सेवा का फल

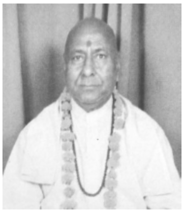

प्रस्तुति– स्वामी पुण्यानन्दपुरीजी

पूज्यपाद ब्रह्मलीन स्वामी तुरीयानन्दपुरीजी महाराज का यह प्रवचन श्री अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम, परमधाम, शास्त्रीनगर, दिल्ली में श्री परम जयन्ती की पूर्व संध्या पर दिया गया था–'हम उसे कैसे प्राप्त कर सकते हैं? क्या वह तर्क–वितर्क से प्राप्त हो सकता है! नहीं! वह तर्क का विषय हैं ही नहीं। क्या वेदों के पठन–पाठन से उसे प्राप्त कर सकते हो? नहीं! तुम तब और उलझ जाओगे, यदि हम शिवपुराण का पाठ करते हैं; तो अंत में यह निष्कर्ष निकलता है कि शिवजी सबसे महान है, और केवल उनकी उपासना से ही भगवान् मिल सकता है। देवी भागवत पुराण पढ़ें, तो लगता है कि माँ जगदम्बा ही हमें भवसागर पार लगा सकती हैं। जितने पुराण पढ़ोगे, उतना हो उलझ जाओगे यदि हम पूर्व में हुए सन्तों के ग्रन्य पढ़े, तो भी काम नहीं चलेगा। क्यों? क्योंकि वे उस समय के डॉक्टर थे, उन्होंने जो कुछ शिक्षा दी, वह उस समय की माँग थी, वक्त के डॉक्टर ही वक्त पर इलाज कर सकते हैं, जो वर्त्तमान में गुरुजन है; उनकी शरण में जायें, वे तुम्हें उपदेश देंगे, वे ही तुम्हें तत्त्व का बोध करायेंगे, जो बात वर्षों की तपस्या से प्राप्त नहीं हो सकती, बह गुरु–भक्ति से कुछ दिनों में प्राप्त हो सकती है।–सम्पादक!

श्री चरणों में उपस्थित
सज्जनो, माताओं और बन्धुओ !

ये हमारा परम सौभाग्य है कि हम परमप्रभु के जन्म दिन की पूर्व पावन बेला पर आयोजित सत्संग में आये हैं। मुझे गुरुदेव की एक बात याद आती है। वे कहते थे कि भाई! यह दुनियादारी सत्संग नहीं है। जो कुछ आज तक सुना है, उसे अपने जीवन में उतारने की चेष्टा करो। एक बार एक महात्माजी एक गाँव में पधारे। गाँव के लोगों ने महात्माजी से प्रार्थना की कि वह सत्संग सुनावें। लोगों ने सत्संग का आयोजन किया। महात्माजी आये और पूछा–भाइयो! क्या आपने पहले भी सत्संग सुना है? लोगों ने कहा महाराज, अनेकों बार सुना है। महात्माजी ने कहा– जब सुना है तो फिर और अधिक क्या सुनाना, इतना कह उठकर चल दिये। गांववालों ने मंत्रणा की। कुछ लोग महात्माजी के पास आये और कहा कि महाराज हम लोगों ने नहीं सुना अतः आप आज सत्संग जरूर करें। यथासमय महाराजी आये और उन्होंने जनसमूह से पूछा– आप में से कितनों ने सत्संग नहीं सुना है। लोगों ने हाथ खड़े किये। महात्माजी ने कहा जिन लोगों ने सुना है. वह उन लोगों को बता दें जिन्होंने नहीं सुना है। फिर उठकर चल दिये। जब लोगों ने सलाह की कि सभी कहेंगे कि हमने नहीं सुना। फिर लोग इकठ्ठे होकर गये और प्रार्थना की। महात्माजी आये और उन्होंने पूछा कि भाई! बताओ आज तक किस–किस ने सत्संग नहीं सुना। सभी कहने लगे कि हमने नहीं सुना। महात्माजी कहने लगे कि इतनी उमर बीत गई है यदि अब तक नहीं सुना तो अब सुनकर क्या करोगे और चल दिये। सच्चाई यह है कि लोग सत्संग सुनने का ढोंग करते हैं कि सत्संग सुना है।

एक बार स्वामी निजात्मानन्दजी को नंगली सरकार ने कहा– सत्संग करो। स्वामीजी खड़े तो हो गये। गला रुंध आया और रोने लगे। रोते ही रहे। तब गुरुदेव ने उन्हें बैठ जाने को कहा। फिर संगत से उन्होंने पूछा कि निजात्मानन्द ने सत्संग में क्या कहा? लोगों ने कहा– महाराज! उन्होंने तो सत्संग किया ही नहीं, वे तो रोते रहे, नंगली सरकार ने कहा–सत्संग तो केवल उसी ने सुनाया है। कइयों ने भगवान के आगे रोकर ही उसे पाया है, भक्त भी रोना सीख ले, तो भगवान को अवश्य प्राप्त कर सकता है, यदि आप भी भगवान से मिलना चाहते हो, तो हृदय में तड़प पैदा करो, रोना सीखो। **'रो–रो कंत सबन ने पाई'** श्री महाराजजी करनी पर बल देते थे, कथनी पर नहीं।

वह परमात्मा सत्य है। हम उसे कैसे प्राप्त कर सकते हैं? क्या वह तर्क–वितर्क से प्राप्त हो सकता है! नहीं! वह तर्क का विषय हैं ही नहीं। क्या वेदों के पठन–पाठन से उसे प्राप्त कर सकते हो? नहीं! तुम तब और उलझ जाओगे, यदि हम शिवपुराण का पाठ करते हैं; तो अंत में यह निष्कर्ष निकलता है कि शिवजी सबसे महान है, और केवल उनकी उपासना से ही भगवान् मिल सकता है। देवी भागवत पुराण पढ़ें, तो लगता है कि माँ जगदम्बा ही हमें भवसागर पार लगा सकती हैं। जितने पुराण पढ़ोगे, उतना हो उलझ जाओगे यदि हम पूर्व में हुए सन्तों के ग्रन्थ पढ़े, तो भी काम नहीं चलेगा। क्यों ? क्योंकि वे उस समय के डॉक्टर थे, उन्होंने जो कुछ शिक्षा दी, वह उस समय की माँग थी, वक्त के डॉक्टर ही वक्त पर इलाज कर सकते हैं, जो वर्त्तमान में गुरुजन है; उनकी शरण में जायें, वे तुम्हें उपदेश देंगे, वे ही तुम्हें तत्त्व का बोध करायेंगे, जो बात वर्षों की तपस्या से प्राप्त नहीं हो सकती, बह गुरु–भक्ति से कुछ दिनों में प्राप्त हो सकती है।

एक आठ वर्षीय मातृविहीन बच्ची जया नाम की थी। एकबार उसके पिता उसे लेकर पंढरपुर पहुँचे। उन्होंने वहाँ सत्संग सुना, उसके पिता को लगा कि जीवन व्यर्थं हो गया, हमने नाम नहीं लिया। उसने लोगों से पूछा कि यहाँ कोई संत हैं। लोगो ने नामदेवजी के बारे में बताया. बाप–बेटी ने दीक्षा ली। कुछ दिन वहाँ रहे। जब पिता चलने लगे, तो उस बच्ची ने जाने से इन्कार कर दिया, क्योंकि उसका मन सेवा में रमने लगा था। उसने जिद की और वहीं रह गई। पढ़ी लिखी तो नहीं थी, न ही कोई गुण थे। बस उसने सेवा प्रारम्भ की, एक दिन रात को ८ बजे संत लोग आ गये। उसने उठकर भोजन बनाया। सेवा में रात्रि के ११ बज गये। नादान बच्ची तो थी ही। देर सोई थी सो सुबह जरा देर से आँख खुली। देखा सन्त लोग तो स्नान कर चुके हैं। उनके गीले कपड़े हैं, नदी पर घोने जाना है। जल्दी से नदी की ओर चल दी। अभी दो कदम आगे बढ़ी ही थी कि ध्यान आया सन्तों को तो अभी नाश्ता देना है। अभी सोच में ही थी कि देखा एक वृद्धा आगे खड़ी है। बुढ़िया ने कहा– बेटी! यह तो तेरा सौभाग्य है कि तुझे सन्तों की सेवा का सुअवसर मिला है। तुम सन्तो को नाश्ता कराओ और नदी से कपडे मैं धो लाती हूँ। इधर जाकर उसने सन्तों नाश्ता कराया, फिर नदी की ओर भागी। देखती हैं कि उस माता ने सभी कपड़े धो–सुखा तह लगाकर रखे हैं। उसने तट से कपड़े उठाये और वह आश्रम की ओर भागी। दो कदम आगे चलने पर उसे लगा कि उसने उस बूढ़ी का धन्यवाद नहीं किया। वह पीछे लौटी, तो देखा माता बहाँ नहीं थी। उसे बहुत दुःख हुआ और वह दरबार में वापिस आई। नामदेवजी ने उसे समझाया और कहा कि वह तो साक्षात् भगवान बिठ्ठल थे। ऐसा सुनते ही वह रोने लगी। तब नामदेवजी ने कहा कि यहाँ तो सेवा का फल तुरन्त मिलता है। एक दिन आयेगा वह विठ्ठल तेरे सामने खड़ा होगा और जब तक तू नहीं कहेंगी, वह नहीं जायेगा।

एक दिन फिर रात्रि में १० बजे अनेक सन्त आ गये। आश्रम में आटा समाप्त था। वह जल्दी से उठी और चक्की पर गेहूँ पीसने बैठ गई। भगवान् विठ्ठल ने देखा कि यह अकेली इतने सन्तों के लिए कैसे गेहूँ पीसेगी। वह स्वयं एक औरत का रूप धारण कर चक्की चलाने में उसका साथ देने लगे। भगवान के गले में मणिमाल थी। उन्होंने सोचा कि कहीं इसकी चमक से न पता चल जाये, सो उन्होंने मणिमाल उतार कर चक्की के पास रख दी। आटा पिसा, संतों ने भोजन किया। वह सो गई।

सुबह जब पुजारी भगवान् विठ्ठल को भोग लगाने मन्दिर में गये, तो देखा कि उनके गले की मणिलाल गायब थी। सब जगह खोज शुरू हुई और मणिमाल चवकी के पास मिली। सब लोगों ने सोचा गरीब लड़की थी, मन फिसल गया होगा

शेष पृष्ठ–25 पर...

स्थानं बलं प्रदानम्

एक गॉव में एक ब्राह्मण और सोनार आजीविका की खोज में बाहर निकले। कुछ दिनों के बाद सोनार घर लौटा। ब्राह्मण कुमार एक हीरा जो उनको दक्षिणा में मिला था, सोनार को यह कह कर दिया–मेरी पत्नी को घर–खर्चा के लिए तुरन्त दे देना। जब आकर सोनार ने १० बजे रात्रि में ब्रह्माणी के दरबाजे पर खड़ा होकर बगल के घर वाले ग्वाले को आवाज दिया–ग्वाला भाई! आकर देख लें मैं पंडिताइन जी को उनके पति द्वारा दिया हीरा दे रहा हूँ। ग्वाले ने कहा– अरे भाई देखना क्या है? आप झूठ थोड़े बोलेंगे। पुनः बगल के एक और घर वाले कुम्हार को पुकार कर कहा– भाई आप भी देख लो। वह कुम्हार भी घर में सोये २ ही बोला ठीक है, ठीक है। आप पर हम सभी को पूर्ण विश्वास है। सालों बाद जब पंडित जी घर आये तो पंडिताइन काफी क्रोधित दिखाई पड़ी। पंडित जी ने जब क्रोध का कारण पूछा तो पता चला हीरा मिला ही नहीं है। पंडित जी दौड़े २ सोनार के पास गये। जब हीरा न देने की बात कही तो सोनार ने कहा– पडित जी! आप विश्वास माने, मैंने हीरा पडिताइन को दे दी है। वह गलत चाल चलन की हो गई है। वह झूठ बोलती है। सच तो यह है कि यह आप को छोड़ना चाहती है। पंडित की सारी पंडिताई धूल में मिल गई। उनको तो अब दिन मे ही तारे दिखाई देने लगे। सोच–विचार कर गांव की सभा कराये। अपनी आप बीता कह रो–रोकर सभी पंचों को सुनाये। जब पचों ने सोनार से पूछा तो उसने अपने गवाहों को पेश कर हीरा देने की पुष्टि कर दी। पंडित जी हार कर राजदरबार गये परन्तु वहाँ भी न्याय न पाकर सर घुनते रास्ते से गुजर रहे थे।

उसी समय गाँव के बाहर एक टीले पर चरवाहे खेल खेलते थे। एक राजा बना था, एक मंत्री और अन्य दरबारी बने थे। पंडित को रास्ते में रोते–जाते देख कर राजा ने कहा– देखो वह पंडित रोता जा रहा है, पूछो क्या बात है? जब उनसे पूछा गया तो रो–रोकर अपनी आप बीती राम कहानी सब सुना दिये। मंत्री ने दरबारियों को आदेश दिया– जाओ सोनार, कुम्हार और ग्वाले को पकड़ लाओ। आज्ञा की देर थी। कुछ ही पलों में वे सभी को पकड़ कर लाये। राजा ने पूछा–सोनार भाई! आपने हीरा पंडिताइन को दी है। उत्तर में उसने कहा– सरकार! साथ के लोगों से जानकारी कर ली जाय। जब राजा ने सबकी बात सुन ली तो सभी को अलग–अलग बैठा दिया और एक एक को बुलाना शुरू किया। पहले कुम्हार को बुलाकर पूछा– आपने हीरा देते देखा था वैसा ही मिट्टी का बनाकर हमें दिखायें कि वह हीरा कैसा था। कुम्भकार दूर जाकर सोचने लगा–कैसा होता होगा हीरा–अरे, गगरी का नांकी के मुंह जैसा होता होगा, और क्या? वह नांकी का मुंह बनाकर राजा को दिखा दिया। राजा ने कहा– ऐसा ही था न? कुम्भकार ने कहा– जी हाँ, ठीक ऐसा ही था। राजा ने कहा–इसे अलग मुशक चढ़ाकर धूप में सुलाकर कोड़े से मारा जाये। पुनः ग्वाले को बुलाकर पूछा गया और उसे भी हीरा जैसा मिट्टी का बनाकर लाने को कहा गया। वह भी सोचते–सोचते सोचा– अरे गाय के या भैंस के सींग जैसा होता होगा। बस यह भी बैंल का सींग बनाकर दिखा दिया। फिर तो उसको भी वही दण्ड दिया गया। जब सोनार को बुलाकर राजा ने कहा– देख ये सब झूठी गवाही का फल भोग रहे हैं। बोल अब भी तू सच–सच बतायेगा या तेरी भी वही दशा हो। तब वह बोला महाराज मेरे सोने के कमरे में तकिया के नीचे है अभी मैं लाकर देता हूँ। ब्राह्मण हीरा पाकर प्रसन्न हो गये। यह बात राजा तक फैल गई। राजा ने सोचा– जिसे पंचों और हम न्याय न दे सके, उसे चरवाहों ने दे दिया। बात क्या है? जब उस टीले की खुदाई हुई तो उसके नीचे विक्रमादित्य का सिंहासन था। पता चला स्थान का प्रताप है 'स्थानं बलं प्रधानम्।

परमपुरी धाम जो परमप्रभु की पावन समाधि है। जहाँ महाप्रभु का पावन शरीर है, वह परम पूज्य स्थान है। वहाँ जाते ही आनन्द, शांति छा जाती है। क्यों न हो–आखिर वहाँ महाप्रभु विराजमान जो हैं।

कर्मणा गहनोगतिः

मनुष्य द्वारा संपादित होनेवाले कर्मों की गति (वर्तमान से लेकर भविष्य तक उसका प्रभाव) बहुत–बहुत जटिल है। इन कर्मों के गर्भ में जहाँ एक ओर अनेकानेक जन्मों तक पीछा न छोड़नेवाले नारकीय भोग हैं, वहीं दूसरी स्थिति स्वर्गीय सुखभोग व भवसंकट से मुक्ति भी है।

आइए कर्मगति को समझनें के प्रयास में सर्वप्रथम हम उस एकमेव सत्य परमात्मा के प्रति नमन, वन्दन करें व उनकी विवेक प्रदायिनी परम कृपा के प्रति श्रद्धापूर्वक व पूर्णमनोयोग से कृतज्ञता व्यक्त करें, क्योंकि उन मायापति की कृपा के बिना विवेक जागृत नहीं होता और विवेक के बिना तो कर्मों की गति समझ में आती ही नहीं।

प्रस्तुत प्रसंग को समझनें के प्रयास में, सारांशतः हम निम्न विन्दुओं को मानस पटल पर रेखांकित कर लें––––––

१) परमात्मा नें '' विवेक'' केवल और केवल मनुष्य को ही प्रदान किया है। क्यों? और किस हेतु? ताकि वह कर्मों के सम्पादन में उसका उपयोग कर आवागमन के चक्र से (भवबन्धन से, बार–बार जन्मने और मरनें व कर्मवश निम्न योनियों में जन्म लेकर नारकीय कष्ट भोगनें के संकट से) मुक्ति पा सके, जो मनुष्य जन्म का मुख्य हेतु या उद्देश्य है।

२) ज्ञातव्य है कि मनुष्य को छोड़कर बाकी (तिरासी लाख निन्यानबे हजार नौ सौ निन्यानबे) योनियां भोग योनियां हैं। इन योनियों में कर्म का दायरा केवल आहार, निद्रा, भय और मैथुन तक सीमित है। उपरोक्त प्रथम विन्दु में दर्शित उद्देश्य (भव संकट से मुक्ति) हेतु कर्म इन योनियों में, विवेक के अभाव में सम्भव ही नहीं है। इसतरह वस्तुतः कर्मयोनि तो केवल मनुष्य योनि ही है जहाँ कर्मों के आधार पर उत्थान व पतन दोनों की गुंजाइश है। इसीलिए मनुष्य योनि को परम दुर्लभ योनि कहा गया है।

३) चूंकि''विवेक''केवल मनुष्य योनि को प्राप्त है, इसलिये मनुष्य योनि में किये गये पतितकर्मों के ही भोग हेतु निम्न योनियों (सूकर, कूकर, कीड़े–मकोड़े, पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, नाली कीट, विष्ठा कीट आदि–आदि) में जन्म लेना व नारकीय भोगों को भोगने हेतु विवश होना पड़ता है। ये भोग जन्म–जन्मांन्तर अनंतकाल तक भोगने पड़ सकते हैं, जिसका ऐतिहासिक वर्णन हमारे पौराणिक ग्रन्थों में उपलब्ध है।

४) यह संसार भगवान की माया है।''माया'' का अर्थ 'मा' अर्थात् नहीं और 'या' का अर्थ है जो, अर्थात् जो यथार्थ में सत्य है नहीं, किन्तु सच ही लगता है। इस संसार में सबकुछ हरक्षण परिवर्तित हो रहा है, नष्ट हो रहा है और जो नष्ट होनेवाला है वह सत्य नहीं है **''त्रिकालो शास्वत इति सत्य।''** जो तीनों काल में एक समान अर्थात् अपरिवर्तित रहे वह ही सत्य है बाकी सब असत्य या माया है। इस तरह संसार में सबकुछ, जो नश्वर इन्द्रियों द्वारा देखा या जाना जाता है, नश्वर या माया है बस उस माया पति परमात्मा को छोड़कर जो इन्द्रियातीत है और जो आत्मसत्ता, प्राणसत्ता या चेतनसत्ता के रुप में जड़ जगत को चेतन और चेतन को जड़ में स्थापित करता है–

'जो चेतन कंह जड़ करइ जड़हिं करत चौतन्य'

इस माया व्यूह में फंसकर मनुष्य नश्वर भोगों (पति, पत्नी, बच्चे, घर–मकान, धन–दौलत, यश, मान, बड़ाई आदि–आदि) के दलदल में ऐसा फंसता है कि उससे निकलना उसके बस की बात नहीं रह जाती जबकि इस दलदल में न फंसना ही उसकी परीक्षा है। चूंकि इन भोगों के अर्जन हेतु मनुष्य को झूठ, फरेब, छल, बल, आदि का भी प्रयोग करना पड़ता है, फलस्वरूप राजसी और तामसी वृत्तियों के प्रभाव के कारण वह मनुष्यता से नीचे गिरता जाता है, परीक्षा में फेल हो जाता है। अंततः वह काम, क्रोध लोभ व मोह के दलदल में धंसकर दम तोड़ देता है, फलस्वरूप निम्न योनियों में जन्म लेकर उसे अनेकानेक जन्मों तक नारकीय भोग भोगनें पड़ते हैं। जो माया

पति के शरण में रहकर सभीकर्म उन्हीं के निमित्त करते हैं, वे दलदल में फंसनें से बच जाते हैं अर्थात् परीक्षा में पास होकर ध्रुव, प्रहलाद, सदना कसाई तथा मीरा की तरह भवबन्धन से मुक्त भी हो जाते हैं।

५) तो फिर एकमात्र उपाय यही है कि हम जल में (माया के बीच में) रहते हुये भी कमल की तरह जल से अलिप्त रहें। यह तभी सम्भव है जब हम मायापति की माया को मायापति के शरणागत होकर जान लें। माया को जानते ही सत्य स्पष्ट हो जाता है, जैसे बाजीगर के साथ रहनेवाले लड़के(जम्भूरे) को सत्य का ज्ञान रहता है कि बाजीगर द्वारा उसे काटा जाना सचमुच ऐसा नहीं है बल्कि खेल है, माया है, कला है। रामायण की पंक्ति है———

सोइ जानत जेहि देहु जनाई।
जानत तुम्हहिं तुम्हहिं होई जाई।।
उमा! दारुजोषित की नाईं।
सबहिं नचावत राम गोसाईं।।

दारुजोषित का अर्थ है कठपुतली।

इस दर्शन (फिलासफी) को जानते ही **''संसार का सत्य एकमेव परमात्मा है''** यह तथ्य उजागर हो जाता है और तब सबकुछ करते हुये भी कर्तृत्वभाव या अभिमान काफूर हो जाता है। कर्तापन के अभिमान के अभाव में हम कर्मफल से मुक्त बन जाते हैं। कर्मफल से मुक्त बन जाना ही आवागमन चक्र से मुक्ति है। तो सारांश में कर्म का अधिकार केवल मनुष्य को है तथा निष्काम भाव व भगवद् अर्पण बुद्धि से कर्मों के सम्पादन द्वारा मनुष्य अर्जुन की तरह युद्ध जैसा वीभत्स कर्म करके भी भवबन्धनमुक्त बन सकता है जिसका आश्वासन स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने दिया है—————

''सर्वधर्मान परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज।
अहं त्वां सर्व पापेभ्योः मोक्षयिष्यामि मा शुच।।''

गीता————१८.६६

शुभकामनाओं के साथ **''जय सच्चिदानंद''!**

शिवकुमार सिंह ''शिवम्''
फरीदाबाद, दिल्ली एनसीआर।

*

पृष्ठ—22 का शेष भाग...

चोरी कर ली होगी। बात राजा तक पहुँची। राजाज्ञा हुई कि उसे अगले दिन ठीक १२ बजे लोगों के सामने फाँसी दे दी जाये।

मनुष्य को यदि गुरु पर विश्वास है, तो वही गुरु त्रास—निवारक भी सिद्ध हो सकता है। ठीक फाँसी के समय उसे स्थान पर ले जाया गया, तो उसी समय वहाँ भगवान विठ्ठल स्वयं प्रकट हो गये। उन्होंने कहा— जया! तुमने कोई व्रत नहीं किया, न ही जप किया, न ही तप किया। मैं बिठ्ठल तेरे आगे खड़ा हूँ। तेरी भक्ति के आगे मैं विवश हूँ। जया हैरान थी, अचानक क्या हुआ बिठ्ठल भगवान् नामदेव के रूप में बदल गये। बोले जो नामदेव, सो विठ्ठल! जया धन्य हो गयी।

हमारा मार्ग गुरुभक्ति का मार्ग है। यह मार्ग अति सुगम है, सुलभ है। रावण जैसा विद्वान—चारों वेदों और छः शास्त्रों का ज्ञाता भी भगवान् को न जान सका। आज चारों ओर तमोगुण का बोलबाला है। परमप्रभु कहा करते थे कि आप केवल गुरुभक्ति के मार्ग पर चलो। उनके सान्निध्य में जो भी आया, उनकी ओर खिचता ही चला गया। महाराजजी एक बड़े भारी चुम्बक थे। उसी कड़ी में हम पूज्यपाद महामण्डलेश्वर स्वामीजी के सान्निध्य में हैं। हमें मात्र निष्काम भाव से गुरुभक्ति करनी है। स्वामीजी गुरुमहाराजजी के मूर्त रूप हैं। यदि हम उनकी सेवा करते हैं, तो हम परम प्रभु को पा सकते हैं। पावन पर्व की इस बेला में मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि वे हमें सन्मार्ग पर चलने की शक्ति दें, हमें अपनी भक्ति दें। हम सच्चे भाव से यदि अपना जीवन समर्पित कर दें, तो हमें भगवान् की प्राप्ति अवश्य हो जायेगी । **''जय सच्चिदानन्द!''** ✦

भक्तों के आठ लक्षण ध्यातव्य हैं— भगवान् के दर्शन की निरन्तर हृदय में इच्छा, दूसरे के अवगुणों का ख्याल न करना, गुणग्राही होना, भजन में प्रेम होना, लोक— निंदा से बचना, इष्ट में अखंड विश्वास रखना, अपनी इन्द्रियों का दमन करना तथा दुष्टों के संसर्ग से अपने को दूर रखना। —पूज्य गुरुदेव!

आश्रम समाचार

राँची में त्रिदिवसीय वार्षिक दीपावली सत्संग समारोह का आयोजन

अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम परमपुरी की शाखा रांची द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय वार्षिक दीपावली सत्संग कार्यक्रम संस्था के अध्यक्ष अनन्त श्री विभूषित महामंडलेश्वर स्वामी निर्भयानंदपुरीजी (पूज्य माताजी) के पावन सान्निध्य में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का श्रीगणेश दिल्ली से आए प्रसिद्ध भजनिक कलाकार जितेंद्र वत्स जी ने अपने भजनों से किया। गुरु भक्ति से उत्पत्ति भावपूर्ण भजनों की प्रस्तुति से भक्तजन आनंदित हुए। दिल्ली से आचार्य प्रेम नारायण शास्त्रीजी ने सत्संग की महिमा को बताते हुए अपने विचार भक्तों के बीच में रखें। परम धाम आश्रम, दिल्ली से आए स्वामी ज्ञानसेवानंदपुरीजी एवं श्री परमपुरी धाम से आए स्वामी पुण्यानंदपुरीजी ने नाम जप एवं गुरुभक्ति की महिमा को बताया।

अंत में महामंडलेश्वर स्वामी निर्भयानन्दपुरीजी (पूज्य माताजी) ने कहां की जब तक हमारा अंतःकरण शुद्ध नहीं होगा तब तक हम उस परम सुख की प्राप्ति एवं परमात्मा का दर्शन नहीं कर पाएंगे। आज का समाज दिन–रात मेहनत करके भौतिक संसाधनों को जुटाने में लगा हुआ है एवं उसको प्राप्त भी किया है, परंतु अंतःकरण की अशुद्धता चित्त की अपेक्षा के कारण प्राप्त वस्तु का जो सुख है उसका उपभोग नहीं कर पा रहा है आज घर मकान परिवार सब कुछ होते हुए भी लोग उसके सुख से वंचित है इसका मूल कारण है कि हम अपने अंतःकरण को अपने खान–पान रहन–सहन से इतना अशुद्ध कर दिए हैं की जो सुख है उसकी अनुभूति हम नहीं कर पाते हैं। अतः सर्वप्रथम अंतःकरण की शुद्धता पर जोर देना चाहिए और वह शुद्ध भगवत् नाम से होता है और नाम गुरु से प्राप्त होता है। **''मंत्र मूलम गुरु वाक्यम''** इस सिद्धांत का अनुसरण करके मनुष्य अपना लोक और परलोक दोनों सुधार लेता है। इस कार्यक्रम को कराने का उद्देश्य भी यही है कि लोग सन्मार्ग पर चलें। भक्ति मार्ग से जुड़कर अपने जीवन को सफल बना सकें। कार्यक्रम में मुख्य रूप से सत्संग मंडल के अध्यक्ष नागेंद्र सिंहजी, संरक्षक श्री डीके सिंहजी (भूतपूर्व निदेशक बीएमडीसी), श्री अनिल सिंहजी, मुन्ना सिंह, ठाकुर भाई एवं अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

*

32वाँ वार्षिकोत्सव सत्संग कार्यक्रम सिंगड़ा, राजस्थान में सम्पन्न।

श्रीमत्परमहंस सदगुरुदेव श्री परम गुरुदेव भगवान्जी के चरणरज उपासक अनन्तश्री विभूषित महामंडलेश्वर स्वामी निर्भयानंदपुरीजी एवं स्वामी नित्यानंदपुरीजी के पावन सन्निध्य में श्रीमती संतोष एवं श्री भंवरलालजी के सहयोग से 32वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 8 एवं 9 नवम्बर, 2025 को ग्राम सिंगड़ा जिला झुंझुनू, राजस्थान में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया ।

श्रीगणेश एवं गुरु वंदना के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। श्री जितेंद्र शर्मा एवं अन्य भजन गायकों द्वारा बहुत ही मार्मिक एवं समर्पण के भजन प्रस्तुत किए गए। महात्मा ज्ञानसेवानंदजी ने नामजप की महिमा पर प्रकाश डाला, वहीं स्वामी नित्यानंदपुरीजी ने सेवा के महत्व को बताया, जिसके द्वारा अंतःकरण शुद्ध होता है।

अन्त में महामंडलेश्वर स्वामी निर्भयानंदपुरी जी (माता जी) ने सेवा सुमिरन समर्पण एवं गुरुदेव भगवान्जी के चरणों में अटूट निष्ठा भाव को सद्गुरुदेव भगवान्जी के अनेक लीलाओं का स्मरण कर भक्तों को बताई। गुरु दरबार की सेवा को अपना सौभाग्य समझना यह सबसे बड़ा ज्ञान है। श्री सदगुरुदेव भगवान अपना कार्य स्वयं किसी को माध्यम बनाकर के करा लेते हैं। इसलिए जो कुछ सेवा मिले उसे अपना सौभाग्य समझना चाहिए।

अन्त में सबको सदगुरुदेव भगवान्जी का शुभ आशीर्वाद प्रदान कर कार्यक्रम को विराम दिया गया। विशाल लंगर भंडारा के साथ दो दिन का यह कार्यक्रम श्रीगुरु भगवान् के आशीर्वाद से संपन्न हुआ।

*

मोरडेहरी आश्रम, औरंगाबाद का वार्षिकोत्सव सत्संग समारोह सम्पन्न

श्री अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम परमपुरी शाखा– मोरडेहरी आश्रम (औरंगाबाद) में कार्तिक पूर्णिमा दिनांक 5 नवंबर 2025 दिन बुधवार को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

संध्या 6:00 बजे नवनिर्मित सत्संग भवन में आरती के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। संतों भक्तों ने बारी–बारी से श्री सतगुरुदेव भगवान्‌जी की आरती उतारे। **'दर्शन करके तन मन शीतल भयो हमार सद्‌गुरुजी'** भाव से गुरुदेव भगवान्‌जी के चरणों में समर्पित किया गया। हनुमान चालीसा का पाठ हुआ एवं भजन सत्संग का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। श्री राम पुकारजी (धनगांई) श्री गणेश सिंह (परसिया) अरुणजय सिंह (औरंगाबाद) श्री परमेश्वर जी की पत्नी (अजनिया) एवं रामेश्वर व्यास मनोरा के द्वारा बहुत ही सुंदर भजनों की प्रस्तुति की गई।

महात्मा शशिशेखरानंदजी, महात्मा राजेश्वरा नन्दजी महात्मा लल्लनजी एवं महात्मा जगदानन्द पुरीजी ने भजन के माध्यम से अपने भावों को रखा।

महात्मा पुण्यानंदपुरीजी ने प्रवचन में कहा कि सेवा हमारे दरबार की पहचान है। गुरु वचन है कि एक वर्ष की निष्काम सेवा सौ साल के भजन के बराबर है। आज भक्तों में सेवा का उत्साह कम होता जा रहा है। हम सबका धर्म है तन मन धन से गुरु दरबार की सेवा करें। आश्रम में हर छोटी–बड़ी सेवा में अपना योगदान दें। महात्मा आराधनानन्दपुरी एवं महात्मा अखंडानंदपुरीजी ने भजन के माध्यम से जीवन के उद्देश्य को बताया। लंगर भंडारा में सभी भक्तों ने प्रसाद पाया। रातभर भजन का कार्यक्रम चलता रहा।

कार्यक्रम में आश्रम के वयोवृद्ध संत स्वामी अवधेशानन्दपुरीजी महात्मा योगानन्दपुरी एवं विशेष रुप से महात्मा जगदानंन्दपुरीजी ने अपना विशेष योगदान दिया। बहुत सुंदर एवं दिव्य रूप से कार्यक्रम संपन्न हुआ। ✦

!! जय सच्चिदानन्द !!

वसंतोत्सव

प्यारे प्रभु प्रेमियो,

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी प्रातः स्मरणीय जगत् वंदनीय हृदय सम्राट पूज्यपाद श्री श्री 108 ब्रह्मलीन श्रीमत् स्वामी स्वरूपानंदपुरीजी महाराज ''परमहंस'' (श्री नंगली निवासी भगवान्) का 'पावन अवतार दिवस एवं श्री परम गुरुदेव भगवान्‌जी के 'बिहार आगमन दिवस' वसंतोत्सव श्री परमपुरी धाम में हर्षोल्लास के साथ निम्नलिखित कार्यक्रमानुसार मनाया जाएगा।

–:कार्यक्रम :–

दिनांकः 22–01–2026 (गुरुवार)

प्रातः8:00 बजे से अखंड नाम हरिकीर्तन प्रारंभ।

दिनांकः 23–01–2026 (शुक्रवार)

प्रातः4:00बजे प्राकट्य पर मंगलआरती एवं बधाई **8:00 बजे से** अखंड हरिनाम संकीर्तन विश्राम, हवन, पूजन, पूर्णाहुति एवं झण्डोत्तोलन **11:00 बजे से** सुंदरकांड पाठ प्रारंभ तत्पश्चात् भजन गायकों द्वारा भजन प्रस्तुति संध्या **7:00 बजे** विशेष आरती, भजन एवं संत महापुरुषों का सत्संग,रात्रि जागरण कार्यक्रम एवं लंगर प्रसाद.

–:निवेदकः–

श्री अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम
श्री परमपुरी धाम, पो०–रायपुरचौर,
जिला–रोहतास (बिहार)
सम्पर्क 7372000511, 7372000512

पटना संगत का मासिक सत्संग कार्यक्रम सम्पन्न।

पटना, दिनांक 09.11.2025 को12.00 बजे मध्याह्‌ण से 05 बजे अपराह्‌ण तक श्रीमती निर्मला देवी के खजपुरा स्थित बी.एन. मिश्रा इन्क्लेब 401 में परमपुरी धाम के महात्मा स्वामी अखण्डानन्दपुरीजी के पावन सान्निध्य में पटना संगत का मासिक सत्संग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अन्त में आरती एवं प्रसाद वितरण के साथ–साथ भक्तों ने भंडारे का प्रसाद ग्रहण किया। ✦

वर्ष २०२६ का वार्षिक राशिफल

प्रस्तुति– डॉ०नरेन्द्र तिवारी ज्योतिर्विद

पूर्व प्रधानाचार्य	–: सम्पर्क सूत्र :–	आवास
श्री हनुमंत संस्कृत उ०म० विद्यालय, चौकाघाट, वाराणसी ।	मो० नं० 9839143791 9044143791	नई बस्ती, मड़ौली, पो० भुल्लनपुर, (डी० एल० डब्लु०), वाराणसी।

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो अ) –

इस राशि एवं लग्न वाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में गुरु तृतीय, केतु पंचम, राहु एकादश, शनि की साढ़ेसाती वर्ष पर्यन्त रहेगी। शारीरिक कष्ट, मानसिका चिन्ता बनी रहेगी। विशेषकर वात् कफ जन्य विकार की शिकायत रहेगी। स्वजनों से मतभेद, कार्यों में अवरोध की 'स्थिति, व्यापार में उतार–चढ़ाव, लेने–देन में क्रय–विक्रय आदि में धोखा घड़ी की सम्भावना अधिक रहेगी। कठिन परिश्रम से कार्य की सिद्धि होगी। स्त्री–पुत्रादि से भी समय–समय पर मतान्तर बनेगी। परिवार में मांगलिक कार्य तया विकास के कार्य प्रयास से सम्पन्न होंगे। अनावश्यक वाद–विवाद की स्थिति बनेगी। रोग आदि में अनावश्यक धन व्यय होंगे। विशेषकर वर्ष के २,४,६,७ मास नेष्ट रहेगा। जातक को हनुमदर्शन, हनुमान चालीसा, शनि चालीसा का पाठ स्वयं करना तथा शनि, केतु, मंगल इन ग्रहों का जप कराना लाभपद रहेगा।

वृष (ई उ ए ओ वा वी वु वे वो)

इस राशि एवं लग्न वाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में गुरु द्वितीय, केतु चतुर्थ, मंगल, राहु दशा एवं शनि एकादश भावगत रहेगा। ग्रहों की स्थिति के अनुसार स्वास्थ्य सामान्य, परिवार में शुभकार्य, स्वजनों के सहयोग से अभिष्टकार्य की सिद्धि, शिक्षा में प्रगति, नौकरी के अवसर प्राप्त होंगे। व्यापार लाभप्रद, सुखद यात्रायें होगी। समय–समय पर वात् पित्त की शिकायत रहेगी। वाहन आदि से चोट–चपेट का योग हैं। अतः वाहन आदि से सावधानी रखनी चाहिए। माता के स्वास्थ्य में न्यूनता, पत्नी से समय–समय पर मतान्तर की स्थिति रहेगी। आपके विकास कार्य को देखकर ईर्ष्या द्वेष करनेवाले अधिक होगे। विशेषकर वर्ष के ३,५,७ माह का समय नेष्ट रहेगा। गुरु, केतु, मंगल इन ग्रहों जाप करना स्वास्थ्य, व्यापार, नौकरी आदि के लिए उत्तम रहेगा।

मिथुन (का की कू घ ड. छ के को ह)

इस राशि एवं लग्न वाले जातक के लिए गुरु प्रथम, केतु तृतीय, मंगल राहु नवम् एवं शनि दशम् भावगत रहेगा। ग्रहों की स्थिति के अनुसार स्वास्थ्य सामान्य, परिवार में विकास के कार्य तथा शुभकार्य होंगे। शिक्षा में प्रगति, व्यवसाय में लाभ, नौकरी के अवसर प्रात होंगे। स्वजनों से आन्तरिक मतभेद रहेगा। पिता के स्वास्थ्य में न्यूनता, विशेष कर वात्–पित्त जन्य विकार होंगे। स्त्री–पुत्रादि से सुख प्राप्त होंगे। राजनैतिक कार्यो में रूचि उत्पन्न होगी। धार्मिक तथा आध्यात्मिक कार्य होंगे। भागदौड़ की स्थिति बनी रहेगी। रोगादि में समय–समय पर व्यय होते रहेंगे। विशेषकर वर्ष के 4,7,10 मास नेष्ट रहेगा। गुरु, मंगल, राहु केतु इन ग्रहों के लिए जप, दान करना एंवं नवग्रह स्रोत का पाठ करना लाभप्रद रहेगा।

कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डू, डो)

इस राशि एवं लग्न वाले जातक के लिए केतु द्वितीय, मंगल, राहु, अष्टम्, शनि नवम् एवं गुरु द्वादश भावगत रहेगा। ग्रहो की स्थिति के अनुसार स्वास्थ्य मध्यम, परिवार में मतान्तर, मानसिक, आर्थिक चिन्ता, व्यापार में उतार–चढ़ाव की स्थिति, भागदौड़ अनावश्यक धन व्यय, कठिन परिश्रम से शिक्षा में प्रगति एवं कार्य की सिद्धि होगी। अनावश्यक वाद–विवाद राजनैतिक कार्यो में धनव्यय, वाहन, आदि से चोट–चपेट, ऑपरेशन

आदि के योग बनेंगे। दाम्पत्य जीवन में समय–समय पर कटुता आती रहेगी। सामान्यतया वर्ष के २,३,७,६ मास नेष्ट रहेगा। मंगल, केतु, राहु इन ग्रहो का जप दान करना, गृह में दुर्गा सप्तशती का पाठ कराना, आयु आरोग्यता तथा परिवार के लिए उत्तम रहेगा।

सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

इस राशि एवं लग्न वाले जातक के लिए केतु प्रथम, मंगल राहु सप्तम्, शनि अष्टम् एवं गुरु एकादश भावगत रहेगा। ग्रहों की स्थिति के अनुसार स्वास्थ्य में समय–समय पर न्यूनता आती रहेगी। मानसिक आर्थिक चिन्ता बनी रहेगी। परिवार से मतभेद रहेगा, पत्नी बच्चों से मतान्तर की स्थिति, इष्टकार्य सिद्धि में विलम्ब, लेने देन, क्रय विक्रय में धोखाधड़ी, चोट–चपेट, ऑपरेशन आदि का योग, वाहन, अग्नि आदि में सावधानी, व्यपार माध्यम, नौकरी के लिए भागदौड़, रोगादि में धनव्यय होंगे। विशेषकर वर्ष मे १,३,७,६ मास नेष्ट रहेगा। केतु, राहु, मंगल का जप कराना तथा स्वयं हनुमदर्शन, शनि चालीसा, हनुमान चालीसा एवं देवी सूक्त का पाठ कराना श्रेयस्कर रहेगा।

कन्या (टो, प (प्र) प पू ष ण ठ पे पो)

इस राशि एवं लग्नवाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में मंगल, राहु, षष्ठ, शनि सप्तम्, गुरू दशम् एवं केतु द्वादश भावगत रहेगा। ग्रहों की स्थिति के अनुसार जातक का स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। गृह में शुभ कार्य तथा विकास कार्य होगा। शिक्षा मे प्रगति होगी। व्यवसाय में उतार–चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। नौकरी के लिए भागदौड़, अनावश्यक धन व्यय होंगे। पत्नी के स्वास्थ्य में न्यूनता समय–समय पर आती रहेगी। विशेषकर वात्–पित्त जन्य विकार की शिकायत रहगी। चोट–चपेट ऑपरेशन की संम्भावना है। विपक्षी प्रबल रहेंगे। ईर्ष्या, द्वेष करने वालों की बाहूल्यता रहेगी। विशेषकर वर्ष के 3,7,9 मास नेष्ट रहेगा। शनि, केतु, मंगल इन ग्रहों का जप कराना तथा गृह में श्रीरूद्राभिषेक तथा श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ कराना आयु आरोग्यता की दृष्टि में लाभप्रद रहेगा।

तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

इस राशि एवं लग्न वाले जातक के लिए लग्न से पंचम भाव में, केतु ग्रहानुसार जातक के स्वास्थ्य सामान्य, समय–समय पर उदर विकार तथा कफ वात् की शिकायत रहेगी। परिवार में शुभकार्य एवं विकास कार्य होंगे। व्यवसाय लाभप्रद, नौकरी में स्थान परिवर्तन, शिक्षा में प्रगति अभिष्ट कार्य की सिद्धि होगी। अनेक सुखद यात्राएँ होंगी। विपक्षी निर्बल रहेंगे। रोगादि में धनव्यय होंगे। धार्मिक, आध्यत्मिक एवं शुभकार्य होंगे। राजनीति के कार्यो में संघर्ष के साथ असफलता मिलेगी। वर्ष के १,३,७ मास संघर्ष पूर्ण रहेगा। घर में श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ कराना श्रेयस्कर रहेगा। स्वयं देवीसूक्त का पाठ प्रतिदिन करना लाभप्रद रहेगा।

वृश्चिक (तो, ना,नी,नू,ने,नो, ना या,यी,यू)

इस राशि एवं लग्न वाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में मंगल राहु चतुर्थ भाव, शनि पंचम, गुरु अष्टम् एवं केतु दशम् भावगत रहेगा। जातक के स्वास्थ्य मध्यम, पेट विकार, उदर विकार, हृदय विकार, जन्य विकार की शिकायत समय–समय पर होती रहेगी। माता के स्वास्थ्य में न्यूनता, स्वजनो से भूमिजन्य विवाद, मानसिक तनाव, पुत्रादि से मतान्तर की स्थिति, भूमि क्रय–विक्रय, लेनदेन में धोखाधड़ी, परिवार में शुभकार्य तथा विकास के कार्य होगे। शिक्षा में प्रगति, व्यापार लाभप्रद, नौकरी के लिए भागदौड़ की स्थिति बनी रहेगी। प्रयास में अभिष्ट कार्य की सिद्धि होगी। रोगादि में धनव्यय होंगे। राजनीति में संघर्ष के बाद भी सफलता नहीं मिलेगी। वर्ष के २,५,७ मास नेष्ट रहेगा। मंगल, शनि, गुरु ,राहु इन ग्रहो का जप कराना, स्वयं को हनुमदर्शन आराधना, सुन्दरकाण्ड, हनुमान चालीसा का पाठ करना लाभप्रद रहेगा।

धनु (ये, यो, भ, भी, भू, ध, फ, ढ, भे)

इस राशि एवं लग्न वाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में मंगल राहु, तृतीय, शनि चतुर्थ, गुरु सप्तम्, एवं केतु नवम् भावगत रहेगा। शनि की अढैया वर्ष पर्यन्त रहेगी। ग्रहो की स्थिति के अनुसार जातक को मानसिक चिन्ता, आर्थिक चिन्ता, परिवार तथा स्वजनो से मतान्तर की स्थिति बनी रहेगी। संघर्ष के साथ अभिष्ट कार्य की सिद्धि होगी। लेनदेन, क्रय–विक्रय में धोखाधड़ी, रोगादि में तथा अनावश्यक कार्यो में धनव्यय होंगे। व्यापार में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। नौकरी में स्थान परिवर्तन की स्थिति बनेगी। संघर्ष तथा कठिन परिश्रम से शिक्षा में सफलता मिलेगी। वर्ष १,३,४,५ मास नेष्ट रहेगा। शनि का वैदिक मंत्र में जप कराना, स्वयं को हनुमदर्शन, हनुमान चालीसा, शनि चालीसा का पाठ करना लाभप्रद रहेगा।

मकर (भी, जा, जी, खी, खू, खे, खो गा गी)

इस राशि एवं लग्न वाले जातक के लिए वर्ष के प्रारम्भ में मंगल, राहु द्वितीय, शनि तृतीय, गुरु षष्ठ एवं केतु अष्टम् भावगत रहेगा। ग्रहों की स्थिति के अनुसार जातक का स्वास्थ्य सामान्य, परिवार में आन्तरिक मतभेद, मानसिक चिन्ता बनी रहेगी। गृह में शुभकार्य तथा विकास के कार्य होंगे। व्यापार में उतार–चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। नौकरी के अवसर प्राप्त होंगे। शिक्षा में प्रगति तथा सफलता मिलेगी। स्त्री–पुत्र का सुख प्राप्त रहेगा। प्रयास से अभिष्ट कार्य की सिद्धि होगी। रोगादि में अनावश्यक धनव्यय होगे। राजनीति क्षेत्र में धनव्यय अधिक लाभ कम होगा। वर्ष ३,५,८ मास नेस्ट रहेगा। मंगल, गुरु, राहु, केतु इन ग्रहों का जप, दान करना स्वयं को श्री हनुमद आराधना, हनुमान चालीस, दुर्गा चालीसा का पाठ करना लाभप्रद रहेगा।

कुम्भ (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

इस राशि एवं लग्न वाले जातकों के लिए वर्ष के प्रारम्भ में मंगल, राहु प्रथम, शनि द्वितीय, गुरु पंचम एवं केतु सप्तम भावगत रहेगा। इन राशि वाले जातक के लिए शनि की साढ़ेसाती वर्ष पर्यन्त रहेगी। ग्रहों के स्थिति के अनुसार जातक का स्वास्थ्य में समय–समय पर न्यूनता, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक चिन्ता बनी रहेगी। स्वजनों में मतभेद की स्थिति बनी रहेगी, व्यवसाय मध्यम, नौकरी के लिए भागदौड़, कठिन परिश्रम से शिक्षा में सफलता एवं अभिष्ट कार्य की सिद्धि होगी। क्रय–विक्रय लेनदेन में धोखाधड़ी, चोट–चपेट लगने का योग है। जातक का सदा वाहन आदि से सावधानी रखनी चाहिये। विशेषकर वर्ष के १,५, ८,९ मास नेष्ट रहेगा। शनि, राहु, केतु, मंगल इन ग्रहों का जप कराना तथा स्वयं को हनुमदर्शन, हनुमान चालीसा, शनि चालीसा का पाठ करना एवं काला या नीला वस्त्र तथा लोहे की अँगुठी धारण करना लाभप्रद रहेगा।

मीन (दी, दू, व, झ, ञ, दे, दो, चा, ची)

इस राशि एवं लग्न वाले जातक के लिए शनि प्रथम, गुरु, चतुर्थ, केतु षष्ठ एवं मंगल, राहु द्वारा भावगत रहेगा। शनि की साढ़ेसाती वर्ष पर्यन्त रहेगी। ग्रहों की स्थिति के अनुसार जातक का स्वास्थ्य सामान्य, मानसिक पारिवारिक आर्थिक चिन्ता बनी रहेगी। परिवार में मतान्तर की स्थिति रहेगी। शुभकार्य तथा विकास कार्य में अवरोध उत्पन्न होता रहेगा। अभिष्ट कार्य सिद्धि में विलम्ब होगा। कठिन परिश्रम से कार्य की सिद्धि होगी। व्यवसाय मध्यम, शिक्षा में व्यवधान, राजनीति में क्षति, भागदौड़ की स्थिति, क्रय–विक्रय लेन–देन आदि में धोखाधाड़ी, स्त्री–पुत्रादि सुख प्राप्ति किन्तु समय–समय पर मतान्तर की स्थिति बनती रहेगी। रोगादि में धनव्यय अधिक होगें। विशेषकर वर्ष के ३,४,८,९ मास नेस्ट रहेगा। जातक को शनि, मंगल, राहु इन ग्रहों का जप कराना, स्वयं हनुमदर्शन, शनि चालीसा का पाठ करना लाभप्रद रहेगा।

माह जनवरी, २०२६ का राशिफल

प्रस्तुति– डॉ०नरेन्द्र तिवारी ज्योतिर्विद

पूर्व प्रधानाचार्य	–: सम्पर्क सूत्र :–	आवास
श्री हनुमंत संस्कृत उ०म० विद्यालय, चौकाघाट, वाराणसी ।	मो० नं० 9839143791 9044143791	नई बस्ती, मड़ौली, पो० भुल्लनपुर, (डी० एल० डब्लु०), वाराणसी।

मेष राशि– उच्चाधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा। समाजिक पद–प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। नए रोजी–रोजगार की प्राप्ति से मन प्रसन्न रहेगा। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

वृषभ राशि– स्वास्थ्य सुख में उतार चढ़ाव आयेगा। आर्थिक, मानसिक, पारिवारिक उलझन का सामना करना पड़ेगा। देश विदेश तीर्थ यात्रा का अवसर एवं पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति।

मिथुन राशि– सक्रियता से कार्य करने पर व्यक्तित्व का विकास होगा। स्वास्थ्य सुख उत्तम, मन शान्त रहेगा। दया–धर्म, तीर्थ यात्रा का अवसर, व्यवहार कुशलता से उन्नति होगी।

कर्क राशि– जटिल समस्याओं का समाधान होगा, नॉकरी में पदोन्नति होगी। मित्र बान्धवों का सहयोग मिलेगा, सहयोगी की उपेक्षा हानिकारक होगी।

सिंह राशि– नॉकरी व्यापारादि में उन्नति होगी। कार्य व्यवहार से सचेत रहें, परिस्थितियों की अनुकूलता से वृद्धि होगी। मान सम्मान की प्राप्ति होगी।

कन्या राशि– स्वास्थ्य सुख सामान्य रहेगा। नए कार्य करने का अवसर मिलेगा। श्रम संघर्ष की अधिकता होगी। नित्य कर्म में व्यवधान आयेगा। आर्थिक लाभ होगा।

तुला राशि– न्यायालय की भाग–दौड़ होगी। रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी। आकस्मिक उलझनों का सामना करना पड़ेगा। रचनात्मक कार्य करने का अवसर मिलेगा।

वृश्चिक राशि– मित्र बान्धवों का सहयोग मिलेगा। राजनैतिक, सामाजिक प्रगति होगी। नॉकरी, व्यापारादि में उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा, न्यायालय की भाग–दौड़ होगी।

धनु राशि– नॉकरी, व्यापार, कृषि आदि में मित्र बान्धवों से आर्थिक लाभ, भवन भूमि का विकास होगा। धन संग्रह करने का अवसर मिलेगा। अचानक हानि हो सकता है।

मकर राशि– दया धर्म करने का अवसर मिलेगा। लाभकारी अवसर प्राप्त होंगे। घर परिवार में मान–सम्मान की प्राप्ति होगी। प्रशासनिक क्षेत्रों में सफलता मिलेगी।

कुम्भ राशि– नॉकरी, व्यापारादि एवं लाभकारी योजनाओं से लाभ होगा। लोकापवाद से कष्ट होगा। अपनी योजनाओं की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा।

मीन राशि– स्वास्थ्य सुख सामान्य रहेगा। परिवार में सुखद समाचार की प्राप्ति होगी। स्त्री, सन्तानादि को कष्ट होगा। अकस्मात शुभ सूचना की शप्ति होगी।

*

–: जनवरी, २०२६ का मुख्य पर्व :–

०१.०१ (गुरुवार)– ईशानद वर्षारम्भ (नव वर्ष प्रारम्भ), प्रदोष व्रतम्।
०३.०१ (शनिवार)– स्नान दानदौ पूर्णिमा, माघ स्नानारम्भ। प्रयागे कल्पवासारम्भ।
०६.०१ (मंगलवार)–संकष्टी श्री गणेश व्रतम्, गणेशोत्पत्ति।
१०.०१ (रविवार)– स्वामी विवेकानन्द एवं श्री रामानन्दाचार्य जयन्ती।
१४.०१ (बुधवार)– षष्ठ तिला एकादशी।
१५.०१ (गुरुवार)– मकर सक्रान्ति जन्य पुष्प माल षष्ठ तिला द्वादशी।
१६.०१ (शुक्रवार)–प्रदोष व्रतम् एवं मास शिवरात्रि व्रतम्।
१८.०१ (रविवार)– मौनी अमावसया।
२३.०१ (मंगलवार)–बसन्त पंचमी, श्रीश्री १००८ श्री सद्गुरुदेव स्वामी स्वरूपानन्दजी महाराज (श्री नंगली निवासी भगवान्) जयन्ती एवं परमप्रभु का बिहार आगमन दिवस। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थापना दिवस।
२५.०१ (रविवार)– अचला सप्तमी।
२६.०१ (सोमवार)– भरतीय गणतन्त्र दिवस।
२७.०१ (मंगलवार)– महानन्दा नौमी, श्री हरसू ब्रह्म जयन्ती।
२९.०१ (गुरुवार)– जया एकादशी व्रतम् सर्वेषाम्।
३०.०१ (शुक्रवार)– प्रदोष व्रतम्।

*

–: विवेक वाटिका :–

उदार कौन...?

करीब आठ सौ वर्ष पूर्व की बात है, कर्णावती नगर में लक्ष्मी नाम की एक सम्भ्रान्त परिवार की महिला रहती थी। एक दिन उसने एक परदेसी को देखा जो वहाँ जीविका की खोज में आया था। 'ऊदा' नामक उस परेदसी के साथ पत्नी और बाल–बच्चे भी थे। 'ऊदा बड़ा उदास नजर आ रहा था–कहाँ जाये, क्या करे। सबकुछ जानकर लक्ष्मी इस परिवार को अपने यहाँ ले गई। उसने उनको रहने के लिए एक घर भी दिया। 'ऊदा' ने मिहनत की, तो कुछ वर्षों में इस परिवार की हालत अच्छी हो गई। उन्होंने पुराने घर के स्थान पर अब नया घर बनाना चाहा और इसके बारे में लक्ष्मी से आज्ञा माँगी। लक्ष्मी ने कहा– "वह घर तो मैंने आप लोगों को ही दे दिया है. इसीलिए आप अपना नया घर उसे तोड़कर बना लें।" जब घर बनने लगा तो पुराने मकान की नींव से स्वर्ण मुद्राओं से भरा कलश निकला। 'ऊदा' उसे लौटाने के लिए लक्ष्मी के पास गया, तो उसने उसे लेने से साफ मना कर दिया– "वह मकान तो मैंने आप लोगों को दे दिया है, अतः यह स्वर्ण कलश भी आप लोगों का ही हुआ।" काफी आग्रह के बाद भी लक्ष्मी नहीं मानी, तो 'ऊदा' को उसे अपने उपयोग में लाना पड़ा। उस धन के कारण अब 'ऊदा' महासेठ उदयन बन गया और बाद में गुजरात का महामंत्री बना।

पर लक्ष्मी की उदारता की गाथा अमर हो गई। लक्ष्मी जैन थी जिस धर्म में अभी भी उसकी उदारता का स्मरण किया जाता है। सचमुच दुनिया का स्वभाव ही है सदा के लिए आँख बन्द करनेवालों को तत्क्षण भुला देना। उदार ही होते हैं जिन्हें दुनिया सदा याद रखती है। कौन हैं उदार? जो लेने में नहीं, सदा देने में विश्र्वास करते हैं। जैसे काले काले मेघ अपना सारा जल बरसा कर विलीन हो जाते हैं, उसी तरह उदार देते–देते शंकर की तरह सबकुछ देकर स्वयं दिगम्बर रह जाते हैं।

*

दुनिया का अन्तिम अंजाम

दुनिया जैसी है, उसे वैसा ही जानना ज्ञान है। सच्चाई से नावाकिफ होने की वजह से ही तुम इससे आसक्त होते हो। एक बाबा किसी नाले के पास बैठ गया। वहाँ ट्टटी, खोपड़ी, चिथड़े आदि तरह तरह की गन्दगियाँ पड़ी हुई थी। बाबाने बाताया कि यही दुनिया है। अच्छे–अच्छे वस्त्रों के अन्तिम रूप हैं चिथड़े। अच्छे अच्छे लज़ीज पदार्थ खाने का परिणाम हैं टट्टियाँ और सुन्दर–सुन्दर शरीर का परिणाम है–खोपड़ी। बस, यही संसार है। दुनिया का अन्तिम अंजाम यही है। इस इसी विवेक–दृष्टि से देखने से यह दुखदायी नहीं बनती। –पूज्य गुरुदेव!

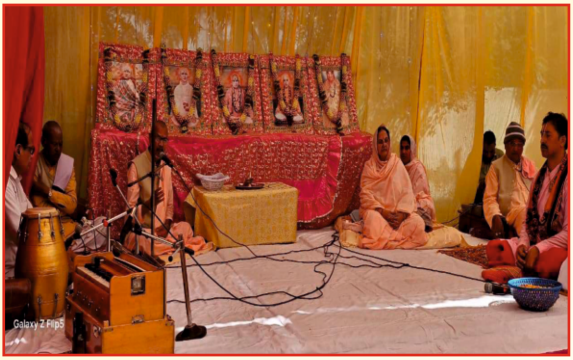

ग्राम सिंगड़ा जिला झुंझुनूं (राजस्थान) अनन्त श्री विभूषित महामंडलेश्वर माता निर्भयानंदन पुरी जी एवं स्वामी नित्यानंद पुरी जी के पावन सानिध्य में दिनांक-08 एवं 09 नवंबर 2025 को आयोजित कार्यक्रम की एक झलक।

41वॉं श्री परमज्ञान सत्संग मंडल, राँची का वार्षिकोत्सव समारोह दिनांक-14, 15 एवं 16 नवम्बर 2025 त्रिदिवसीय सत्संग कार्यक्रम की एक झलक।

R.N.I.'s Regd. No. 22165/71 Postal Regd.No. SSR/G-1/23-25

LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No. 01/LWP/SSR/96

परम ज्ञान प्रकाश आध्यात्मिक मासिक दिसम्बर- 2025

✓ बिहार सरकार द्वारा पुस्तकालय एवं शिक्षण-संस्थाओं के लिये स्वीकृत

✓ गृह विशेष, बिहार सरकार की सूची में दर्ज, ज्ञापन- संख्या : 5449/C

दिनांक-05.11.2025 को कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर मोरडेहरी आश्रम, औरंगाबाद में आयोजित सत्संग कार्यक्रम की एक झलक।

सेवा में,

ग्राहक सं.————————————————

श्रीयुत/श्रीमती————————————————

————————————————

सदस्यता-शुल्क सूची

एक प्रति रू॰ 25.00 एक वर्ष का रू॰ 251.00 त्रैवार्षिक रू॰ 751.00 पंचवार्षिक रू॰ 1251.00

दसवार्षिक रू॰ 2551.00आजीवन- रू॰ 5001.00 संरक्षक- रू॰ 7551.00 विशेष संरक्षक- रू॰ 11111.00

पत्रिका के नये ग्राहक बने/ बनावें एवं पत्रिका का बकाया शुल्क खाता सं0 3006000100003076

IFSC Code: PUNB0300600 खाता का नाम- 'परम ज्ञान प्रकाश', पंजाब नेशनल बैंक शाखा- रायपुरचौर में जमा करें।

सम्पादक- डा0 नरेन्द्र तिवारी 'ज्योतिर्विद' -सह सम्पादक- स्वामी प्रज्ञानन्दपुरीजी

कार्यकारी सम्पादक - श्री जगदीश प्रसाद सिन्हा 'दयानिधि'

E-mail ID: jagdish.pds5@gmail.com Mob:9334319012

प्रकाशक-परम ज्ञान परिषद्-श्री अद्वैत स्वरूप संन्यास आश्रम परमपुरी

ग्राम + पोस्ट - रायपुरचौर, जिला-रोहतास - 821113 (बिहार)

मुद्रकः शार्प कम्प्यूटर्स, पटना मोः 9334205352, 9279180358